।। ओ३म् ।।

पाक्षिक परोपकारी

• वर्ष ५८ • अंक २३ • मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र • दिसम्बर (प्रथम) २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती

व उद्घाटन सत्र
सरस्वती भवन
आर्यवीर दल
आपका अभिनन्दन करता है
ऋषि मेले की झलकियाँ
ऋग्वेद पारायण यज्ञ

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ **अंक** : २३

दयानन्दाब्द: १९२

विक्रम संवत्: मार्गशीर्ष कृष्ण २०७३

कलि संवत्: ५११७

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,

केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु.,

त्रिवार्षिक-५८० रु.,

आजीवन-(१५ वर्ष)-२००० रु.।

एक प्रति का मूल्य - १५/-

विदेश

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डालर

द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डॉलर,

त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डॉलर,

आजीवन-(१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.

एक प्रति का मूल्य - पाउण्ड-३

एक प्रति का मूल्य - डॉलर - ४

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

दिसम्बर प्रथम २०१६

अनुक्रम

०१. मैं दु:खी क्यों हूँ?	सम्पादकीय	०४
०२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०६
०३. प्रत्युत्तर- ''अथ-सृष्टि उत्पत्ति.....''	शिवनारायण	१३
०४. सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार की भव्य योजना		१६
०५. हिन्दुओं के साथ विश्वासघात	चन्द्रिका प्रसाद	१७
०६. गुरुकुल	तपेन्द्र कुमार	२२
०७. जिज्ञासा समाधान-१२१	आचार्य सोमदेव	२६
०८. आचार्य धर्मवीर कृतज्ञता-सम्मेलन	प्रभाकर	३१
०९. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		३४
१०. संस्था-समाचार		३५
११. समर्पित से भी अधिक समर्पित डॉ. धर्मवीर जी		३८
१२. प्रतिक्रिया		४१
१३. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

मैं दु:खी क्यों हूँ?

प्रस्तुत सम्पादकीय प्रो. धर्मवीर जी के द्वारा उनके निधन से पूर्व लिखा गया था। ये लेख अधूरा है, अगर पूरा होता तो स्वयं एक जीवन-शास्त्र होता। पर जितना भी है, उतना ही उपयोगी है, सारगर्भित है। इस लेख में आचार्य जी ने जीवन जीने की आदर्श शैली की ओर संकेत किया है। इससे पाठकों को अवश्य लाभ मिलेगा।

-सम्पादक

मुझे लगता है कि संसार में सबसे दु:खी व्यक्ति मैं ही हूँ। सब मुझे सदा दु:ख ही देते रहते हैं। भगवान् भी मुझे दु:ख ही देता है। मैं अपने माता-पिता से दु:खी हूँ, मुझे लगता है कि घर में मुझसे पक्षपात् होता है और सबकी सुनी जाती है, सबकी इच्छाएँ पूरी होती हैं। मुझे इच्छा करना ही अपराध लगने लगा है। मैं अच्छा करता हूँ, पूरा करने का प्रयत्न भी करता हूँ, पर पूरा न होने पर एक दु:ख और अपने दु:ख में जोड़ लेता हूँ। इच्छा पूरी न होने का एक दु:ख था, उसमें असफलता का दु:ख और जोड़ लिया। क्या संसार में मैं दु:ख पाने के लिये ही आया हूँ?

मुझे लगता है कि संसार में मेरे चारों ओर मुझे दु:ख देने वाले एकत्र हो गये हैं। मुझे लगता है ये लोग गलत हैं, ठीक नहीं हैं। ये सुधर जायें तो सब ठीक हो सकता है। ये बच्चे सुधर जाते तो सब ठीक हो जाता, परन्तु इनको मेरी बात समझ में ही नहीं आती। समझा-समझा कर दु:खी हो गया हूँ। पत्नी है कि सुनती नहीं है, बच्चों को बिगाड़ दिया है। मैं जो कहता हूँ उसका उल्टा करती है, बच्चों को उल्टा सिखाती है। मेरा पड़ौसी नालायक है, गन्दा है, कोई अच्छी आदत ही उसमें नहीं है। गन्दा रहता है, गन्दगी करता है, शराब पीता, गालियाँ देता है, समझाने पर भी समझता नहीं है। मेरे कार्यालय में मेरे साथी चापलूस और कामचोर हैं, अधिकारी रिश्वतखोर, पक्षपाती हैं। संसार में जिधर देखता हूँ, सब बिगाड़-ही-बिगाड़ है। उससे मैं बहुत दु:खी हो गया हूँ।

मुझे लगता है कि लोग मन्दिर जाते हैं, सत्संग करते हैं, प्रवचन सुनते हैं, क्या इनसे दु:ख दूर होता है? यदि ऐसा करने से दु:ख दूर होता है तो सारे मन्दिर जाने वाले सुखी हो जाते। सारे प्रवचन करने वाले क्या सुखी हैं? सत्संग में सुख होता तो सभी सत्संग करके सुखी हो चुके होते, परन्तु ऐसा लगता नहीं। फिर सोचता हूँ कि यदि इन सबसे सुख नहीं मिलता, तो इतने लोग सुख प्राप्त करने के लिये यहाँ की ओर क्यों दौड़ रहे हैं? सुनने में आता है कि सत्संग सुनकर डाकू सभ्य मनुष्य बन गया, अंगुलीमाल डाकू भगवान् बुद्ध का भक्त बन गया। ये ठीक है, सब तो नहीं सुखी होते, परन्तु कुछ तो सुखी होते देखे जाते हैं। जैसे खेत में डाले गये सारे बीज नहीं उगते। कोई पत्थर पर गिरकर पड़ा सड़ जाता है। किसी को पक्षी खा लेता है, तो कोई कीड़े से नष्ट कर दिया जाता है, कोई उगकर पशु-पक्षियों द्वारा खा लिया जाता है, फिर भी खेती की जाती है और उसी से भूखे मनुष्यों को भोजन मिलता है। लगता है सत्संग की खेती का भी यही हाल है, जो बीज उर्वरा भूमि में गिर जाता है, उसमें बीज पौधा बनकर फल देने लगता है। प्रवचनकर्त्ता सम्भवत: यही उपदेश कर रहे थे कि दु:ख दूर करने का सत्संग ही एक उपाय है।

संसार में दु:ख है, लोग इसे दूर भी करना चाहते हैं तो इसका उपाय भी निश्चित होगा। सत्संग में दु:ख दूर करने का उपाय बताते हुए यही तो कहा जा रहा

था। दु:खी हम इसलिये हैं कि हम अपने से बाहर की वस्तुओं को दु:ख का कारण समझ रहे हैं। जब तक मैं दूसरों को दु:ख का कारण समझूँगा, तब तक मेरे दु:खों से मुझे छुटकारा नहीं मिलेगा, क्योंकि दु:ख का कारण मेरे अन्दर है। जिन बातों से, जिन वस्तुओं से, जिन व्यक्तियों से मैं दु:खी हूँ, उसका कारण है कि मैं उनसे असन्तुष्ट हूँ। मेरे असन्तोष का मूल मेरी उनसे अपेक्षा है, मैंने सबसे अपेक्षा पाल रखी है। जब मेरी इच्छा पूरी नहीं होती तो मेरे अन्दर असन्तोष जन्म लेने लगता है। यह असन्तोष ही मेरे दु:ख का कारण है।

मेरे दु:ख का दूसरा कारण है कि मैं सब व्यक्तियों को सुधारना चाहता हूँ। सभी वस्तुओं को अपने अनुकूल बनाना चाहता हूँ। ऐसा करना मेरे सामर्थ्य से परे है। मेरे लिये सम्भव नहीं है। मैं जिसे सुधारने का यत्न करता हूँ और जिसे मैं सुधार नहीं सकता, उन दोनों में अन्तर होता है। जिसे मैं पहले से सुधारने योग्य नहीं मानता, उनसे मैं दु:खी नहीं होता, उन्हें वैसा ही मानकर व्यवहार करता हूँ, जिनको सुधारने की इच्छा करता हूँ, उनके लिये प्रयत्न करता हूँ, फिर असफल होने पर दु:खी होता हूँ। सुधार का प्रयत्न करना अच्छी बात है, परन्तु असफलता पर दु:खी होना बुरी बात है, जब कोई नहीं सुधरता तो उसको भी उपेक्षा की कोटि में डाल दिया जाए, तो मेरा दु:ख दूर हो सकता है।

मैंने दु:खों के नाम रख दिये हैं। ये सास है, ये बहू है, ये देवरानी या जेठानी है, इन नामों से दु:ख लगने लगता है, यथार्थ तो यह है कि दु:ख व्यवहार में है, संज्ञा में नहीं। दु:ख तो बेटे-बेटी से भी होता है। माता-पिता, भाई से भी होता है। संसार में रक्त-सम्बन्ध को सुख का कारण तथा दूर को दु:ख का कारण मानते हैं, परन्तु यथार्थ में जितना दु:ख सम्बन्धियों में, सगे भाइयों में होता है, उतना दु:ख किसी और से नहीं मिलता। जितने झगड़े, लड़ाई, मुकद्दमें भाइयों में परस्पर होते हैं, उतने दूसरों से तो नहीं होते। फिर दु:ख का कारण व्यक्ति नहीं, विचार है। विचार ठीक न होने की दशा में कोई भी दु:ख का कारण बन सकता है, परन्तु मैंने मान लिया कि सास दु:ख ही देगी, बहु विरोध ही करेगी।

जिनको मैं बदल नहीं सकता, जिन्हें मैं छोड़ भी नहीं सकता, क्या उनसे लड़ाई, झगड़ा, तनाव करके मैं सुखी रह सकता हूँ? कदापि नहीं। फिर मैं क्या करूँ, जिससे मेरा दु:ख दूर हो? इसलिये उनसे मेरा व्यवहार निष्पक्षता का हो, उदासीनता का हो। ....

- धर्मवीर

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि हों तो कृपया सभा के पते पर भिजवा देवें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाले विशेषांक के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख विशेषांक में प्रकाशित किये जा सकें। **ई-मेल-psabhaa@gmail.com**

-मन्त्री, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर-३०५००१ (राज.)

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेषकर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

कुछ तड़प-कुछ झड़प

- राजेन्द्र जिज्ञासु

आर्यसमाज की सैद्धान्तिक विजय:- यह ठीक है कि इस समय देश में अंधविश्वासों की अंधी आंधी चल रही है। नित्य नये-नये भगवानों व मुर्दों की पूजा की बाढ़ सी आई हुई है। तान्त्रिकों की संख्या अंग्रेजों के शासन काल से कहीं अधिक है। राजनेता, अभिनेता व टी. वी. जड़ पूजा तथा अंधविश्वासों को खाद-पानी दे रहे हैं।

आर्यसमाज के दीवाने विद्वानों, संन्यासियों तथा निडर भजनोपदेशकों ने अतीत में अंधेरों को चीरकर वेद का उजाला किया। उसी लगन व उत्साह से आज भी आर्यसमाज अंधविश्वासों के अंधकार का संहार कर सकता है।

स्वर्ग-नर्क, जन्नत-जहन्नुम की कहानियों का सब मत-पंथों में बहुत प्रचार रहा। ऋषियों ने घोष किया कि सुख विशेष का नाम स्वर्ग है और दु:ख विशेष का नाम नर्क है। महान् विचारक डा. राधाकृष्णन् जी ने ऋषि के स्वर में स्वर मिला कर लिखा है:-

"Heaven and hell are not physical areas. A soul tormented with remorse for it deeds is in hell, a soul with satisfaction of a life well lived is in heaven. The reward for virtuous living is the good life. Virtue it is said, is its own reward."

(The Present Crisis of Faith. Page19)

अर्थात् बहिश्त व दोज़ख कोई भूगोलीय क्षेत्र नहीं हैं। अपने दुष्कर्मों के कारण अनुतप्त आत्मा नर्क में है व अपने द्वारा किये गये सत्कर्मों से तृप्त, सन्तुष्ट आत्मा स्वर्गस्थ है। सदाचरणमय जीवन का पुरस्कार अथवा प्रतिफल श्रेष्ठ जीवन ही तो है। कहा जाता है कि पुण्य-भलाई अपना पुरस्कार आप ही है।

डॉ. राधाकृष्णन् ने अपने सुन्दर मार्मिक शब्दों में महर्षि दयानन्द के स्वर्ग-नर्क विषयक वेदोक्त दृष्टिकोण की पुष्टि तो की ही है, साथ ही पाठकों को स्मरण करवा दें कि देश के विभाजन से पूर्व जब बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय ने एक आर्य-बाला कल्याणी देवी को धर्म विज्ञान की एम. ए. कक्षा में प्रवेश देकर काशी के तिलकधारी पौराणिक पण्डितों के दबाव में वेद पढ़ाने से इनकार कर दिया, तब डॉ. राधाकृष्णन् जी ही उपकुलपति थे। मालवीय जी भी पौराणिक ब्राह्मणों की धांधली का विरोध न कर सके और डॉ. राधाकृष्णन् जी भी सब कुछ जानते हुए चुप रहे।

आर्यसमाज ने डटकर अपना आन्दोलन छेड़ा। आर्यों के सर सेनापति स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी स्वयं काशी में मालवीय जी से जाकर मिले। मालवीय जी स्वामी जी के पुराने प्रेमी, साथी व प्रशंसक थे। आपने आर्यसमाज का पक्ष उनके सामने रखा। डॉ. राधाकृष्णन् जी ने तो स्पष्ट ही लिखा कि विश्वविद्यालय आर्यसमाज का दृष्टिकोण जानता है। मैंने इस आन्दोलन का सारा इतिहास स्वामी जी के श्रीमुख तथा पं. धर्मदेव जी से सुना था। विजय आर्यों की ही हुई।

कुछ समय पश्चात् डॉ. राधाकृष्णन् जी ने अपनी पुस्तक Religion and Society में स्त्रियों के वेदाध्ययन के अधिकार के बारे में खुलकर सप्रमाण लिखा। डॉ. राधाकृष्णन् जी का कर्मफल-सिद्धान्त पर भी वही दृष्टिकोण है जो ऋषि का है। आर्यसमाज को चेतनाशून्य हिन्दू समाज को अपने आचार्य की सैद्धान्तिक दिग्विजय का यदा-कदा बोध करवाते रहना चाहिये। इससे हमारी नई पीढ़ी भी तो अनुप्राणित व उत्साहित होगी।

इतिहास से ऐसी चिढ़:-न जाने आर्यसमाज के इतिहास तथा उपलब्धियों से शासन को तथा आर्यसमाज के पत्रों में लेख लिखने वालों को अकारण चिढ़ है अथवा इन्हें सत्य इतिहास का ज्ञान नहीं अथवा ये लोग जान बूझकर जो मन में आता है लिखते रहते हैं। एक ने यह लिखा है कि महात्मा हंसराज १५ अप्रैल को जन्मे। ऋषि के उपदेश भी उन्हें सुना दिये। दूसरे ने सान्ताक्रुज़ समाज के मासिक में यह नई खोज परोस दी है कि हरिद्वार के कुम्भ मेले में एक माता के पुत्र को शस्त्रधारी गोरों ने गंगा में फैंक दिया। माता बच्चे को बचाने के लिये नदी में कूद पड़ी। पिता कूदने लगे तो गोरों ने शस्त्र------महर्षि यह देखकर -------। किसी प्रश्नकर्ता ने इस विषय में

प्रकाश डालने को कहा। मैंने तो कभी यह लम्बी कहानी न सुनी और न पढ़ी। इस पर क्या लिखूँ? श्री धर्मेन्द्र जी जिज्ञासु ने भी कहा कि मैं यह चटपटी कहानी नहीं जानता। यह कौन से कुम्भ मेले की है। यह सम्पादक जी जानते होंगे। लेखक व सम्पादक जी दोनों ही धन्य हैं। देहलवी जी का हैदराबाद में मुसलमानों से कोई शास्त्रार्थ हुआ, यह नई कहानी गढ़ ली गई है।

स्वराज्य संग्राम में ८०% आर्यसमाजी जेलों में गये। यह डॉ. पट्टाभिसीतारमैया के नाम से बार-२ लम्बे-२ लेखों में लिखा जा रहा है। डॉ. कुशलदेव जी आदि को तो यह प्रमाण मिला नहीं। वह मुझसे पूछते रहे। कोई सुनता नहीं। स्वतन्त्रता दिवस पर सरकारी भाषण व टी. वी. तो आर्यसमाज की उपेक्षा कर ही रहे थे। आर्यसमाजी पत्रों ने भी अनर्थ ही किया। दक्षिण में किसी समाजी ने श्री पं. नरेन्द्र, भाई श्याम जी, श्री नारायण पवार सरीखे परम पराक्रमी क्रान्तिवीरों का, जीवित जलाये गये आर्यवीरों व वीराङ्गनाओं का नाम तक न लिया।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी देश के एकमेव संन्यासी थे जिन्हें सेना में विद्रोह फैलाने, सुभाषचन्द्र जी बोस की सेना पर गोली न चलाने की प्रेरणा देने के लिये शाही किले लाहौर में बन्दी बनाकर यातनायें दी गईं। किसी आर्यसमाजी ने कभी यह अद्वितीय घटना किसी लेख में दी क्या? जब वीर भगतसिंह व उनके साथियों ने काल कोठरी में अनशन किया तो लाहौर में उनके समर्थन में भारी सभा की गई।

उस सभा की अध्यक्षता के लिये कोई आर्यवीर चाहिये था। सब देशभक्तों की दृष्टि स्वतन्त्रानन्द जी पर पड़ी। शूरता की शान हमारे स्वामी जी ने अध्यक्षीय भाषण में एक ऐसी हुँकार भरी कि अगले रविवार समाज मन्दिर जाते हुए उन्हें बन्दी बना लिया गया। पूज्य महाराज के हाथों को हथकड़ी न लग सकी तो दो हथकड़ियों को जोड़कर उनको बन्दी बनाया गया। पंजाब के गवर्नर की हत्या का षड्यन्त्र रचने का भयङ्कर केस भी चलाया गया। स्वतन्त्रता संग्राम पर लम्बे-लम्बे लेख लिखने वाले किसी तथाकथित रिसर्च स्कॉलर ने देश को स्वामी जी की इस देन की चर्चा की? न जाने वर्तमान के इन लेखकों को स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी से क्या द्वेष है।

क्या-क्या लिखा जाए? स्वतन्त्रता दिवस पर वीर भगतसिंह तथा पं. लोकनाथ जी की रट तो अवश्य लगा लेते हैं। परोपकारी में वीर भगतसिंह के हस्ताक्षर युक्त **इतिहास की साक्षी** पढ़कर आचार्य उदयवीर शास्त्री के आज्ञाकारी प्यारे शिष्य भगतसिंह, भगवतीचरण, दुर्गा भाभी के लिये आचार्य उदयवीर ने जान जोखिम में डालकर जो इतिहास रचा, वह सरकार को न भाया और यह आर्यसमाज के इतिहासकारों की समझ से भी बाहर है। भगतसिंह को, दुर्गा व बोहरा को शरण देना और दिलाना, असैम्बली बम्ब काण्ड की जाँच करने वाले अधिकारी के घर तक पहुँचकर वीर भगतसिंह का पूरा अता-पता निकालकर लाना, यह गम्भीर दार्शनिक गुरु दिलजले आचार्य उदयवीर की कोई साधारण देश सेवा है? कोई आर्यसामाजिक पत्र-पत्रिका दिखाओ, जिसमें स्वतन्त्रता संग्राम व स्वतन्त्रता दिवस पर किसी सम्पादक ने यह प्रसंग दिया है।

हमारी माता गोदावरी महाराष्ट्र में देश की अखण्डता के लिये जीवित जलाई गई। देश के लिये उसके अद्भुत बलिदान व शौर्य पर किसने लिखा और कौन-२ बोला? दुखी मन से यह प्रसंग छेड़ना पड़ गया। आर्यसमाज के इतिहास को रौंदा जाना मुझसे सहा नहीं जाता।

ऋषि-जीवन पर एक दस्तावेज़:- रावलपिण्डी (पश्चिमी पंजाब) में ऋषिजी को एक पारसी की कोठी में ठहराया गया। उसका नाम कई जीवनी लेखक ने अपनी-अपनी समझ से लिखा। फारसी व पारसी साहित्य की कुछ-२ जानकारी होने से मैंने अपना मत कुछ पत्रों में लिखा कि यह नाम 'जमशेद' होना चाहिये। अंग्रेज़ी की रंगत से भले ही कुछ बदल जाए, परन्तु 'जमशेद' जैसी ध्वनि होनी चाहिये। मैंने १६-१७ वर्ष पूर्व श्री ओंकारनाथ जी मुम्बई वालों को पत्र लिखकर कहा कि पारसियों से इस नाम का पता लगाना चाहिये। आप इस परिवार के लोगों को लाहौर से ही खूब जानते थे।

आपने २५ मार्च सन् २००० में मुझे एक महत्त्वपूर्ण पत्र लिखकर प्रामाणिक जानकारी दी। उस परिवार की सब कम्पनियों के नाम व दूरभाष नं. भी अलग कागज़ पर लिखकर भेजे। उनका पत्र तो रखकर मैं भूल गया।

कम्पनियों के नाम कोठी वाले पारसी के नाम पर ही थे। उसका छाया चित्र महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण जीवन-चरित्र में दे दिया गया। अब वह पत्र भी मिल गया है। श्री हरबिलास जी ने भी यही नाम अपने ग्रन्थ में दिया है। मुझे और भी प्रमाण मिल गये थे। मैंने सब ग्रन्थ में दे दिये। ओंकारनाथ जी का पत्र भी एक दस्तावेज़ है। यह परोपकारी में तथा हरबिलास जी के ग्रन्थ में भी छपने से लाभ होगा इसलिये यह पत्र दिया जा रहा है-

दिनांक:- २५-३-२०००

प्रिय भ्राता जिज्ञासु जी,

सप्रेम नमस्ते,

आप का कृपा-पत्र मिला। आर्यसमाज के कार्यों में व्यस्त रहने के कारण आपको उत्तर नहीं दे सका, जिसका मुझे खेद है।

मैं आपका पत्र अंतरंग में रख दूँगा, मुझे आशा है कि १०० पुस्तकों को लिये तो पास हो ही जायेगा और आप को D. D. से रुपया भिजवाने का प्रबन्ध कर दूँगा।

३/४/२००० को ५० व्यक्ति मॉरिशस आर्य महासम्मेलन के लिये जा रहे हैं, १२-४-२००० को वापस आयेंगे।

महर्षि दयानन्द जब रावलपिंडी गये थे, वह पारसी जैमसेटजी JAMSETJEE की कोठी पर ठहरे थे- यह ठीक नाम है क्योंकि इनकी कम्पनी का नाम था ''JAMSETJEE AND CO.'' इनकी कराची, लाहौर, रावलपिंडी में ब्रांचें थीं और अंग्रेजी शराब और रेलवे के पुराने माल के नीलाम करने वाले थे (AUCTIONEER) रेलवे के संबन्ध मेरा लाहौर में १९४२ में वास्ता पड़ता था - लाहौर छावनी में इनका कार्यालय था।

आपने महर्षि के रावलपिंडी जाने का सन् १९६८ लिखा है - वह १९७९ है, आप ठीक कर लें और परिवार में सबको नमस्ते। योग्य सेवा से सूचित करें।

भवदीय
ओंकारनाथ

एक प्रेरक प्रसंग:- एक प्रेरक प्रसंग मैं कभी-२ सुनाया करता हूँ। इसे तड़प झड़प में देने की प्रेरणा की गई है। श्री महात्मा आर्यभिक्षु जी ज्वालापुर वाले एक बड़े कार्यक्रम में रुड़की पहुँचे। एक विशाल भवन के कई कमरों में सबको ठहराया गया। दूसरी मंज़िल पर सीढ़ियाँ चढ़ते ही पहले कक्ष में महात्मा जी का डेरा था। कमरा बड़ा था। वह अकेले ही उसमें थे।

दिल्ली से एक बड़ी आयु की माता सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर पहुंची। जिस नौकर ने उसका बिस्तरा आदि उठा रखा था, खुला कमरा देखकर माता जी ने उसे कहा, ''मेरा बिस्तर भी यहीं रख दे। एक चारपाई इधर लगा दे।''

झट से आर्यभिक्षु जी बोले, ''नहीं! नहीं! आगे बहुत कमरे हैं। इनको कहीं अन्यत्र ले जाओ।''

इस पर वह वृद्धा बोली, ''इतना बड़ा कमरा है। आपको मेरे यहाँ ठहरने पर क्या आपत्ति है?''

महात्माजी ने कहा, ''**मुझे तो कोई आपत्ति नहीं है। मनु महाराज को और ऋषि दयानन्द जी को आपत्ति है। मैं उनसे बड़ा तो नहीं हूँ।**''

यह कथन स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। कभी बहिन सुशीला आर्या ने लिखा था:-

'काजल की कोठरी विश्व यह, बचकर रहो कलङ्क से'

एक सज्जन ने कहा कि मैं बाबा द्वारा यहाँ-वहाँ संचालित कन्या गुरुकुलों को देखकर चिन्तित हूँ। समाधियाँ लगवाने वाले भी अब इस प्रतियोगिता में आगे बढ़ रहे हैं। क्या बनेगा इन गुरुकुलों का?

कोई पता करके बतावे:- इतिहास एक अन्तहीन शास्त्र है। अभी-२ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के एक ७६ वर्ष पुराने लेख से पता चला है कि आर्य सत्याग्रह हैदराबाद में चार सगे भाई बारी-बारी सत्याग्रह करके जेल गये। सबसे छोटे भाई का नाम भारत भूषण था। बड़े तीन भाइयों का क्या नाम था? वह कहाँ के रहने वाले थे? मैंने श्री पं. नरेन्द्र जी, श्री पं. गोपालजी शास्त्री, मान्य शेषराव जी, हरिपन्त गुरुजी के मुख से इनकी चर्चा नहीं सुनी थी। सत्याग्रह के संचालक से बढ़कर और किसका लेख प्रामाणिक हो सकता है। अत: हमें पूरी शक्ति लगाकर इस आर्य-परिवार की, उनके नामों की और उनके समाज व नगर की खोज करनी है। इन्हें हम आर्यसमाज के इतिहास के **'चाफेकर बन्धु'** कह सकते हैं। जाखल (हरियाणा) से दो सगे भाई महाशय हंसराज और श्री रामशरण तो उस

सत्याग्रह में सहस्रों मील दूर गये थे। उनके तीसरे भाई महाशय मोहनलाल घर को सम्भालते रहे। मैं हषवर्धन व लोखण्डे जी को भी यह खोज करने के लिये लिख रहा हूँ। हैदराबाद सभा के रिकार्ड में कुछ हो तो पं. प्रियदत्त जी, श्री पं. रणवीर जी भी कुछ कर सकते हैं।

प्रभु इन्हें और धर्म-धुन व धर्म-धन देवें:- पिछले कुछ वर्षों में बड़ी-बड़ी बातें बनाने वाले कई युवक मेरे सम्पर्क में आये। अलभ्य ग्रन्थों, शास्त्रार्थों व पं. धर्मदेव जी आदि के बारे व मत-पन्थों के बारे मुझसे चलभाष पर जानकारी लेते रहे। मैंने उन्हें कथनी-करनी में खरा न पाया। एक ने पूछा राधा और कृष्ण के बारे, कभी सिखों के बारे, कभी बुद्धमत विषयक साहित्य और कभी मौलवियों के बारे जानकारियाँ लेते रहते। राधा पर लिखा तो पं. मनसाराम जी के ग्रन्थ का और पण्डित जी का नाम तक न लिखा। पं. धर्मदेव जी के ग्रन्थ उठाकर वैदिक स्कॉलर बनकर संदर्भ-ग्रन्थ के रूप में शतपथ तथा अन्य-अन्य आर्ष ग्रन्थों के नाम दिये जाते हैं।

ऐसी बात नहीं है कि उत्साही, निष्काम और सुयोग्य-समर्पित युवकों का अकाल पड़ गया है। गत ५-६ वर्षों में कई युवकों ने धर्म-रक्षा व शोध के कार्य एक नया इतिहास बनाया है, जो सबके सामने है। अभी-अभी मान्य श्री एम. वी. आर. शास्त्री जी के स्वामी श्रद्धानन्द जी पर नये ग्रन्थ की विस्तृत भूमिका लिखने के लिये मुझे प्रसिद्ध उर्दू पत्रकार स्वर्गीय दीवान सिंह जी मफ़्तून की आत्मकथा की आवश्यकता पड़ गई। आप स्वामीजी महाराज के भक्त व प्रशंसक थे। लेखक जाने माने थे। मैं ग्रन्थ का नाम ही भूल गया। उसमें स्वामीजी पर क्या लिखा है----यह तो मुझे कुछ कुछ याद था।

परन्तु ग्रन्थ सामने रखकर प्रमाण देना चाहता था। सोचा कि श्री लक्ष्मणजी अथवा राहुलजी को यह कार्य सौपूँ। स्वयं तो अब एक-एक कार्य के लिये मैं भागदौड़ नहीं कर सकता। अभी यह सोचा ही था कि राहुलजी का फोन आ गया कि दीवान सिंह मफ़्तून की एक बड़ी पुस्तक हमारे एक कृपालु मुसलमान को मिली है। उसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी पर भी कुछ पृष्ठ हैं। क्या आपको चाहिये? मैंने कहा, ''दस दिन के भीतर मंगवा दो। मैं तो आपको यह कार्य सौंपने ही वाला था।'' राहुल जी ने गुरुग्राम के प्रिय श्री इन्द्रजित जी को सामग्री भेज दी। आपने पाँच दिन के अन्दर-अन्दर सब कुछ पहुँचा दिया। ये दोनों परमोत्साही युवक वर्ष भर जो कुछ मैं उन्हें कहता हूँ, कर दिखाते हैं। धन लुटाते हैं। निष्काम भाव से लगे रहते हैं। धर्म-रक्षा में हमारे विद्वान् जो कुछ परोपकारी में लिखते हैं, उसमें इस पं. लेखराम वैदिक मिशन के आर्यवीरों का निरन्तर सहयोग रहता है। प्रभु हमारे इन युवा धर्मवीरों को धर्म-धन व धर्म-धुन से मालामाल करते रहें।

मफ़्तून जी के ग्रन्थ से:-जो जानकारी महात्मा श्रद्धानन्द जी के बलिदान की घटना पर मफ़्तून जी के ग्रन्थ में है, वह किसी भी ग्रन्थ में नहीं है। मेरे चालीस वर्ष पुराने लेखों में तो दी गई थी। यह ध्यान रहे कि दीवानसिंह सिख थे। आर्यसमाज के प्रशंसक भी थे। स्वामी रामानन्द जी आर्य संन्यासी ने स्वामीजी पर फायर होते ही मफ़्तून जी को फ़ोन कर दिया। वह तत्काल बलिदान भवन पहुँच गये। हत्यारे ने आधे घण्टा पहले ही तो महाराज की हत्या की थी। आपने हत्यारे को पहचान लिया। वह पहले मफ़्तून जी के 'रियासत' मासिक का कातिब था। उसके उन्मादी होने के कारण उसे वहाँ से निकाला गया। उसने बलिदान भवन में तब डॉ. इंसारी को 'आदाब अर्ज़' भी किया था। वह डॉ. इंसारी आदि बड़े-बड़े मुस्लिम नेताओं को ख़ूब जानता था। वह हिजरत करके अफ़गानिस्तान चला गया। लौटा तो वहीं से वह पिस्तौल लाया था, जिससे महाराज की हत्या की थी। मफ़्तून जी ने वीर धर्मसिंह की जांघ में गोली लगी देखी थी। वह एकदम शान्त था। स्नातक धर्मपाल जी को हत्यारे पर चढ़कर उसे दबाया देखा। बलिदान भवन में बहुत लोग आ रहे थे। निर्भय संन्यासी ने हत्यारे की प्यास बुझाई। क्रूर हत्यारे को उस समय अपने किये पर कोई दुःख व लज्जा नहीं थी।

मान्य अर्जुनदेव स्नातक जी का लेख:- वेदवाणी के अगस्त २०१६ के अंक में मान्य विद्वान् श्री अर्जुनदेव जी स्नातक ने पं. श्रद्धाराम फिलौरी रचित पौराणिक आरती पर बहुत विद्वत्तापूर्ण लेख दिया है। इस वेद विरुद्ध आरती (दुखिया का रोना) को कई आर्यसमाजों में भी गाया जाता है। जब पहले-पहल मैंने आर्यगज़ट में इस गीत की तार्किक

समीक्षा की, तो प्रिं. लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित ने श्रद्धाराम के इस गीत को एक लेख में निर्दोष बताने का यत्न किया था। अब जब आर्यजगत् में एक हिन्दुत्ववादी ने इस आरती की प्रशंसा करते हुए पं. श्रद्धाराम की प्रशंसा में बहुत कुछ निराधार, तथ्यहीन लिख दिया तो इधर मैंने श्रद्धाराम जी की प्रामाणिक जीवनी, उसके अपने लेखों से उस लेख पर परोपकारी में प्रतिक्रिया दी तो साथ में साथ स्नातक जी का भी पठनीय लेख वेदवाणी में छप गया। न जाने किस कारण से सभाओं या संस्थाओं के पत्रों के सम्पादक ऐसे अवसर पर मौन साधे रहे। वेदवाणी तथा स्नातक जी को बधाई हो।

उजालों में पलते अंधेरों के अजगरः- प्रधानमन्त्री मोदी जी ने श्री लालूप्रसाद की निन्दा करते हुए कहा था कि तन्त्र-मन्त्र से से नहीं लोकतन्त्र से जीत होती है। सभी पार्टियों में तान्त्रिकों, ज्योतिषियों की चलती है। अब भाजपा की मुख्यमन्त्री ने राजस्थान संस्कृत की आड़ में जादू-टोने को पाठ्यक्रम में स्थान दिया है। दलितों के लिये सब दल गला फाड़-फाड़ कर बोल रहे हैं। सन् १९५४ तक भी देश की हिन्दुत्ववादी संस्थाओं ने मन्दिर-प्रवेश, अस्पृश्यता-निवारण के लिये आगे बढ़कर कुछ किया क्या? आर्यसमाजियों के दलितोद्धार में सिर फूटे, हत्यायें हुईं, अभियोग चले। उन आर्य हुतात्माओं का हिन्दू संगठनों ने कभी नाम लिया? बलिदान पर्व मनाया? गुरुओं, आचार्यों को महिमा-मण्डित करते हुए शङ्कराचार्य आदि के चित्र छपे। नारी को नर्क का द्वार क्या शङ्कराचार्य ने नहीं लिखा व कहा? नारी व दलितों को वेदाध्ययन से वञ्चित किया या नहीं? ऋषि दयानन्द ने, स्वामी श्रद्धानन्द जी ने नारी जाति को व सब ब्राह्मणेतर जातियों को वेदाध्ययन का अधिकार देकर हिन्दुओं का कलङ्क का टीका धो दिया। हिन्दुत्ववादी एक भी ऐसी संस्था न चला सके जहाँ नारी व ब्राह्मणेतर वेद पढ़-पढ़ा सकें। पत्थर-पूजक, पाषाण हृदय लोग आचार्यों में महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम लेने से डरते हैं। आज भी **उजालों में पलते अंधेरों के अजगर,** रोगों को दूर करने की इनमें इच्छा नहीं।

आवश्यक-सूचना

परोपकारिणी सभा की रसीद-बुक (रसीद संख्या ४५५१ से ४६०० तक) ऋषि मेले के समय खो गई है, जिसमें संख्या ४५५१ से ४५८८ तक की रसीदें कटी हुई हैं। इन संख्याओं की रसीदें जिन भी महानुभावों के नाम से काटी गई हों वे कृपया अपनी रसीद की एक फोटो कॉपी सभा के पते पर अवश्य भेज देवें। **- मन्त्री**

आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में स्थिर-निधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परोपकारिणी सभा की स्थापना करते समय तीन उद्देश्य रखे थे-

१. वेद और वेदांगादि शास्त्रों के प्रचार अर्थात् उनकी व्याख्या करने-कराने, पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने, छापने-छपवाने आदि में, २. वेदोक्त-धर्म के उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशक-मण्डली नियत करके देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में भेजकर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग कराने आदि में। ३. आर्यावर्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरक्षण, पोषण और सुशिक्षा में व्यय करें और करावें।

इन कार्यों को करने के लिये सभा का वर्तमान मासिक व्यय लगभग १२ लाख रुपये है, जो कि आर्यजनों के दान पर ही निर्भर है। परोपकारिणी सभा के कार्यकारिणी अधिवेशन सं. २२९ एवं साधारण अधिवेशन सं. १२० के प्रस्ताव १३ में आचार्य धर्मवीर जी द्वारा प्रारम्भ किये गये बृहत् प्रकल्पों (प्रकाशन, प्रचार, अध्यापन आदि) हेतु आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रुपये की स्थिर-निधि बनाने का संकल्प लिया गया है। आर्यजनों से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में अपना अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर आचार्य जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

- मन्त्री

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १८ से २५ जून, २०१७

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

प्रत्युत्तर- ''अथ-सृष्टि उत्पत्ति व्याख्यास्याम की माप तौल का उत्तर''

- शिवनारायण उपाध्याय

परोपकारी अक्टूबर (प्रथम) २०१६ में आचार्य दार्शनेय लोकेश के लेख 'प्रत्युत्तर-अथ-सृष्टि उत्पत्ति व्याख्यास्याम की माप तौल' का उत्तर इस लेख द्वारा दिया जा रहा है। श्री दार्शनेय लोकेश लिखते हैं कि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका-वेदोत्पत्ति विषय (प्रकाशक-आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट पेज १६) में 'ते चेकस्मिन ब्राह्मदिने १४ चतुर्दश भुक्ता भोगा भवन्ति' जो लिखा है तो उसका ये अर्थ नहीं है और न हो सकता है कि एक ब्राह्म दिन में १४ मन्वन्तर का काल ही भोगकाल होता है। वस्तुत: ऐसा कहने से स्वामी जी का तात्पर्य है कि 'पूरे और व्यतीत भाग के साथ ७ वें वर्तमान तक बीत चुके हैं' [फिर आप मेरे लेख में त्रुटि निकालते हुए लिखते हैं 'भुक्त ना कि भुक्ता जैसा कि उपाध्यायजी ने लिखा है'] श्रीमान् मेरा लेख जो अगस्त द्वितीय २०१६ में परोपकारी में प्रकाशित हुआ है, उसमें भुक्त ही प्रकाशित हुआ है ना कि भुक्ता। आप एक बार परोपकारी के पृष्ठ १५ पर देखें। उसमें प्रकाशित है 'ते चैकस्मिन् ब्राह्मदिने १४ चतुर्दश भुक्त भोगा भवन्ति' साथ ही हिन्दी अनुवाद में भी प्रकाशित है अर्थात् १४ मन्वन्तर का काल भुक्त भोग काल है। लेखन त्रुटि तो आपके इस लेख में ही है। आठवीं पंक्ति में लिखा है 'ब्राह्मदिने १४ चतुर्दश भुक्ता भोगा भवन्ति।' स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐसी त्रुटियों पर ध्यान नहीं देते थे। उन्होंने लिखा है कि 'लेखन त्रुटि निकालना तो प्राइमरी विद्यालय के अध्यापक का कार्य है।' इसलिए मैं आप द्वारा की गई अशुद्धि पर ध्यान देना उचित नहीं मानता हूँ।

'ते चैकस्मिन् ब्राह्मदिने १४ चतुर्दश भुक्त भोगा भवन्ति।' का स्वामी जी ने यही अर्थ किया है कि १४ मन्वन्तर भुक्त भोग काल है। इसलिए उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि यह जो वर्तमान ब्राह्मदिन है, इसके १९६०८५२९७६ वर्ष इस सृष्टि को तथा वेदों की उत्पत्ति में व्यतीत हुए हैं और २३३३२२७०२४ वर्ष सृष्टि को भोग करने के बाकी रहे हैं। इन दोनों संख्याओं का योग १९६०८५२९७६

+२३३३२२७०२४=४२९४०८०००० वर्ष आता है जो १४ मन्वन्तरों की आयु के तुल्य है। साथ ही उन्होंने यह भी लिखा है कि 'एक सहस्त्र १००० चतुर्युगानि ब्राह्मदिनस्य परिमाणं भवति। ब्राह्म्यारात्रेरपि तावदेव परिमाणं विज्ञेयम्' मैं तो उनकी दोनों मान्यताओं को स्वीकार करता हूँ। मैं तो वेदाध्ययन के सबसे नीचे के पायदान (उपाध्याय) पर हूँ। इसलिए उनका विरोध करने को पूर्णरूप से असमर्थ हूँ। आप आचार्य हैं, मननशील विद्वान् हैं, आप उनका विरोध करने में समर्थ हैं अत: आप स्वामी दयानन्द का विरोध करते हैं तो करते रहें।

फिर आप लिखते हैं कि श्री शिवनारायण का यह लिखना गलत है कि 'अर्थात् १४×७१=९९४ चतुर्युगी ही भोग काल है। स्वामीजी ने सृष्टि उत्पत्ति की गणना उस समय से की है जब मनुष्य उत्पन्न हुआ।' यही नहीं पूर्ण विरोधाभास के साथ लिखते रहे हैं 'मनुष्य के उत्पन्न होने के साथ ही चार ऋषियों के द्वारा परमात्मा ने वेद ज्ञान दिया। परन्तु सृष्टि उत्पत्ति प्रारम्भ होने से लेकर मनुष्य की उत्पत्ति होने तक के व्यतीत काल को उन्होंने गणना में नहीं लिया है।' मेरा यह लिखना गलत कैसे हो सकता है कि स्वामी जी ने सृष्टि उत्पत्ति काल की गणना उस समय से की है जब मनुष्य उत्पन्न हुआ। सोचो जब मनुष्य उत्पन्न हुआ और यज्ञ करने लगा तो उसने संकल्प-मंत्र में पहला दिन गिना। जब मनुष्य उत्पन्न ही नहीं हुआ था तो संकल्प-मन्त्र कैसे बोला जा सकता था? फिर इसमें विरोधाभास कैसे है कि सृष्टि उत्पत्ति होने से लेकर मनुष्य की उत्पत्ति का समय उन्होंने नहीं गिना। श्रीमान् जी आपको मेरे लिखने में सन्देह इसलिए है कि आपने क्वान्टम सिद्धान्त के भाग Probability के अनुसार सृष्टि के भुक्त भोग-काल को ९९४ चतुर्युगी तथा सृष्टि की कुल आयु १००० चतुर्युगी स्वीकार की है। 'एके मनकस्तथा सावर्ण्यादय आगामिन: सप्त चैते मिलित्वा १४ चतुर्दशैव भवन्ति। तत्रैकसप्ततिश्चतुर्युगानि ह्येकैकस्य मनो: परिमाणं भवति। ते चैकस्मिन्ब्राह्मदिने १४ चतुर्दश भुक्तभोगा भवन्ति। एक सहस्त्रं १००० चतुर्युगानि ब्राह्मदिनस्य परिमाणं भवति।' (ऋ.भा.भू. पृष्ठ २०)

अर्थात् ये स्वायम्भवादि सात मनु और आगामी सात मनु ये सब १४ ही होते हैं। एक मनु में ७१ चतुर्युगियां होती हैं और एक ब्राह्म दिन में १४ मनुओं का भुक्त भोग काल होता है। एक हजार चतुर्युगियों का ब्राह्म दिन का परिमाण होता है। इससे स्पष्ट है कि ब्राह्म दिन में १४ मन्वन्तरों का काल भुक्त भोग काल है।

ऋग्वेद भाषा-भाष्कर में एक प्रश्न पृष्ठ ३० पर उठाया गया है।

प्रश्न- सृष्टि की आयु की शेष ६ चतुर्युगियों के विषय में आपका क्या मत है? इनकी गणना के विषय में क्या महर्षि ने कुछ स्पष्ट निर्देश दिया है?

उत्तर-वेद तथा सृष्टि के ऐतिहासिक संवत् निर्णय होने पर जो शेष समय है वह सृष्टि की रचना का समय है। इसमें महर्षि के निम्न वचन प्रमाण स्वरूप दिये जाते हैं।

(१) सृष्टि की उत्पत्ति करके हजार चतुर्युगी पर्यन्त ईश्वर इसको बनाये रखता है। हजार चतुर्युगी पर्यन्त सृष्टि मिटाकर प्रलय अर्थात् कारण में लीन रखता है।

- ऋ.भाष्य भूमिका.

इससे स्पष्ट है कि सृष्टि रचना में जो समय लगता है वह सृष्टि का है और प्रलय होने में जो समय लगता है वह प्रलय का समय है।

(२) जब सृष्टि का समय आता है, तब परमात्मा उन सूक्ष्म पदार्थों को इकट्ठा करता है। (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ७)

इससे भी स्पष्ट है कि सृष्टि रचना में प्रथम परमाणु संयोग से लेकर मानव रचना तक जो भी समय लगता है वह सृष्टि का समय है किन्तु उसको मानव ने नहीं गिना, अत: महर्षि ने उसे ऐतिहासिक समय में नहीं जोड़ा।

(३) सृष्टि और प्रलय के लक्षणों से भी स्पष्ट है कि संसर्गकाल सृष्टि का होता है और वियोगकाल प्रलय का होता है। पं. सुदर्शनदेव तथा पं. राजवीर शास्त्री का लेख है 'मयासुर का सूर्य सिद्धान्त सन्धि काल की मान्यता का आधार है।' यह ग्रन्थ अनार्ष पौराणिक मान्यताओं से ओत-प्रोत होने से महर्षि को मान्य नहीं है। उन्होंने सन्धि के विषय में एक शब्द भी नहीं लिखा है। सन्धिकाल एवं सन्धांशकाल को शब्द भी नहीं लिखा है। सन्धिकाल एवं सन्धांश काल को पहले ही युगों की आयु में ले लिया गया है। फिर प्रत्येक मन्वन्तर के पूर्व १७२८००० वर्ष (सतयुग का काल) जोड़ना व्यर्थ है। क्या प्रत्येक मन्वन्तर में पहले दो युग सतयुग के होंगे?

आदित्य पाल सिंह ने तो वेदों के ऋषियों को मूर्ख तक लिखा है। स्वामी दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट सन्ध्या की खिल्ली उड़ाई है। उनके लेख को प्रमाणित नहीं माना जा सकता है। संकल्प मन्त्र में गणना मनुष्य के होने पर आरम्भ हुई है। इसलिए स्वामी दयानन्द की गणना उचित है।

फिर आप लिखते हैं, 'श्रीमान् उपाध्यायजी से यह जानना जरूरी है कि वेद मनुष्य की शतवर्षीय आयु बताता है तो क्या ये मानना होगा कि गर्भ काल के २८० दिन काटने के बाद बच्चे ९९ वर्ष २ माह २० दिन ही (भोगकाल अर्थात् वास्तविक जीवन्तता का समय) शतायुर्भव का तात्पर्य है? ऐसा कदापि नहीं हैं। इस पर मेरा कहना है कि जिस प्रकार भुक्तभोग काल में सृष्टि के निर्माण काल को नहीं जोड़ा गया है। सृष्टि के पूर्ण होने पर वेदोत्पत्ति और मनुष्य की उत्पत्ति होने के बाद से समय की गणना की है, इसी प्रकार शिशु के गर्भ में निर्माण का काल नहीं जोड़ा जायेगा। ऐतिहासिक काल की दृष्टि से माता के गर्भ से जन्म लेने के बाद ही समय की गणना प्रारम्भ होगी। आप अपनी मान्यता को छलपूर्वक लागू करना चाहते हैं। ब्रह्मा की आयु तो निश्चित रूप से १००० चतुर्युगी ही है, क्योंकि भुक्तभोग काल के अतिरिक्त सृष्टि निर्माण काल में भी वह सक्रिय रहता है। आप जब यह कहते हैं कि सृष्टि उत्पत्ति, वेदोत्पत्ति और मानव उत्पत्ति सब एक साथ होती हैं, तब मुझे कहना पड़ा कि ऋग्वेद के अनुसार सृष्टि उत्पत्ति में समय लगता है।

फिर वैदिक वाङ्मय का स्पष्ट मानना है कि सृष्टि की क्रमिक उत्पत्ति हुई है। क्रमिक उत्पत्ति में समय तो लगेगा ही। मैं इस विषय में प्रमाण देता हूँ।

(१) तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाश: सम्भूत:। आकाशाद्वायु:। वायोरग्नि:। अग्नेराप:। अद्भ्य: पृथिवी। पृथिव्या ओषधय:। ओषधीभ्योऽन्नम्। अन्नाद् रेत:। रेतस: पुरुष:। स वा एष पुरुषोऽन्नरसमय:। (तैत्ति. उप. ब्रह्मानन्द वल्ली प्रथमोऽनुवाक:)

इस श्लोक में मनुष्य ६ क्रमिक परिवर्तनों के बाद आया है।

(२) सोऽकामयत। बहु स्यां प्रजायेयेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा इदं सर्वमसृजत। यदिदं किञ्च। तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्। तदनुप्रविश्य। सच्चत्यच्चाऽभवत्। निरुक्तञ्चानिरुक्तञ्च। निलयनञ्चानिलयञ्च। विज्ञानञ्चाविज्ञानञ्च। सत्यञ्चानृतञ्च। सत्यमभवत्। यदिदं किञ्च तत्सत्यमित्याचक्षते।। (तैत्ति.उप.ब्रह्मानन्दवल्ली षष्ठोऽनुवाकः।।)

यह श्लोक भी सृष्टि की क्रमिक उत्पत्ति बता रहा है। फिर यह श्लोक तो वर्तमान विज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण मान्यता की घोषणा भी कर रहा है कि संसार में प्रत्येक उपपरमाण्विक कण का एक विलोम कण भी है। इसी प्रकार सांख्य दर्शन भी क्रमिक उत्पत्ति बता रहा है।

(३) तस्मै स होवाच प्रजाकामो वै प्रजापतिः स तपोऽप्यत, स तपस्तप्त्वा स मिथुनमुत्पादयते। रयिञ्च प्राणञ्चेत्येतौ मे बहुधा प्रजाः करिष्यत इति।। प्रश्नोपनिषद् के प्रथम प्रश्न के उत्तर में यह कण्डिका भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें भी सृष्टि उत्पत्ति के लिए तप द्वारा रयि और प्राण का जोड़ा उत्पन्न किया गया है। महात्मा नारायण स्वामी ने इस पर लिखा है कि यहाँ प्राण उसी ईश्वर प्रदत्त गति को कहते हैं, जिसका नाम वैज्ञानिकों ने शक्ति Energy रखा है और उसी गति से विकृत हुई प्रकृति रयि कहलाती है। विज्ञान में इसे Matter कहा जाता है। आगे की कण्डिकाओं में सृष्टि की क्रमिक उत्पत्ति का ही वर्णन है।

(४) देवानां युगे प्रथमेऽसतः सदजायत।
तदाशा अन्वजायन्त तदुत्तानपदस्परि।।

– ऋ. १०.७२.३

देवों के निर्माण के इस प्रथम युग में अव्यक्त (असत्) प्रकृति से यह आकृति वाला जगत् उत्पन्न हुआ है। इन लोकों के उत्पन्न होने के बाद दिशाएं उत्पन्न हुईं। उसके बाद ऊर्ध्व गति वाले वृक्ष वनस्पति उत्पन्न हुए हैं। इस प्रकार देवयुग के बाद वनस्पति युग आया।

(५) देवयुग अर्थात् सूर्य-चन्द्र आदि की उत्पत्ति निम्न ऋचा में है-

देवानां नु वयं जाना प्र वोचाम विपन्यया।
उक्थेषु शस्यमानेषु यः पश्यादुत्तेर युगे।।

– ऋ. १०.७२.१

अब हम वेद-वाणी रूप प्रशस्त वाणी से चन्द्र, तारे, सूर्य, पृथ्वी आदि देवों के जन्मों को प्रतिपादित करते हैं। इसलिए इन वेदमन्त्रों के स्रोतों के उच्चरित होने पर जो उपस्थित होता है, वह आगे के आने वाले युगों में इस सृष्टि की उत्पत्ति को देखता है।

(६) अघमर्षण मन्त्र भी सृष्टि की क्रमिक उत्पत्ति बताते हैं-

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽर्णवः।।

– ऋ.१०.१९०.१

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोअजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।

– ऋ.१०.१९०.२

सूर्याचन्दमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।

– ऋ.१०.१९०.३

इन ऋचाओं में 'ततः' शब्द का अर्थ है-इसके बाद। इतना ही नहीं, वेद में भी सृष्टि की उत्पत्ति महान् विस्फोट Big Bang से ही मानी गई है।

ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मार इवाधमत्।
देवानां पूर्व्ये युगेऽसतः सदजायत।।

– ऋ.१०.७२.२

ज्ञान का स्वामी परमात्मा इन सूर्यादि देवों की आकृतियों को, प्रकृति पिण्ड संतप्त कर ढालता था। इन देवों के निर्माण वाले प्रथम युग में अव्यक्त-प्रायः प्रकृति से व्यक्त-जगत् उत्पन्न हुआ है।

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नति देकर सबको दुःख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अन्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

– महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन-चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में ठोस श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्त प्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहा है, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्य जन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला दिल्ली में वर्ष २०१४ से लगातार इन ग्रन्थों का नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है। प्रचार-प्रसार की योजना तैयार की गयी है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१. यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। **२.** आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों का पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। **३.** दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? - यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है व होगी। **४.** पाखण्ड, मक्कारी, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। **५.** सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। **६.** सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है, जरूरी है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा-१.** सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साईज डिमाई आकार में होगा। लागत मूल्य १००/- रुपये प्रति पुस्तक। **२.** ऋषि जीवन चरित्र हिन्दी में लगभग १६४ पृष्ठ व साईज डमई आकार में। लागत मूल्य ६०/- रुपये प्रति पुस्तक। **३.** महर्षि द्वारा रचित पुस्तक आर्याभिविनय हिन्दी में ६४ पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में, लागत मूल्य ३०/- रु. प्रति पुस्तक।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य शिक्षित विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए अच्छी वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता सम्पर्क आदि हो, जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**
१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

हिन्दुओं के साथ विश्वासघात

- चन्द्रिका प्रसाद

आह! क्या हृदय है? धर्म के स्थान में अधर्म, पुण्य के स्थान में पाप, सदाचार के स्थान पर दुराचार, ज्ञान के स्थान में मूर्खता, सत्यता के स्थान में छल-कपट, प्रेम और समाज-संगठन के स्थान में द्वेष और कलह! हा भारत! तुझे कैसे भयङ्कर रोगों ने आ घेरा! जिस जाति में कभी व्यास जैसे ऋषि ने एक ईश्वर की पूजा का वेदोक्त उपदेश सुनाया हो, जिस जाति में राम और जनक जैसे सच्चे ईश्वर-भक्त रहे हों, आज उसमें एक ओर से ''अहम्ब्रह्म'' ध्वनि आ रही है तो दूसरी ओर से ''नास्तिकता'' का अलाप सुनाई पड़ता है। आज कहीं यह वितण्डा खड़ा है कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव इन तीनों में कौन बड़ा और कौन छोटा है और इनकी धर्म पत्नियों की शक्तियाँ एक-दूसरे से कितनी बढ़-चढ़कर हैं। कहीं लोग पशु-पक्षी, पर्वत, नाले और चौराहे पर माथा रगड़ रहे हैं। हा! ३३ करोड़ देवता मानती हुई आज वह जाति विधर्मियों के ताजिया, मदार, फकीरों और कब्रों पर भक्तिभाव से रेवड़ियाँ माँगती फिरती है। भोली-भाली स्त्रियाँ अपने बीमार बच्चों का इलाज न करके मुसलमानों से फुकवाती फिरती हैं। मुसलमान इन स्त्रियों को ठगते हैं और समय पाकर उठा ले जाते हैं।

जहाँ विद्वान्, ब्रह्मवेत्ता, ऋषि-मुनि यज्ञ व अग्निहोत्र से भारत को स्वर्गमय बना रहे थे, आज वही आलसी, मूर्ख, पाखण्डी, संन्यासी बनकर व्यभिचार और गाँजा-चरस आदि का प्रचार कर दरिद्र भारत का मटियामेट करने पर तुले हैं। जिन देव-स्थानों में महात्माओं के उपदेश और धर्मकार्य होते थे, आज वहाँ लम्पट, गँवार व्यभिचार और अत्याचार कर रहे हैं। अहिंसाव्रतधारी कृष्णगोपाल का नाम लेने वाली जाति आज गौओं को कसाइयों के हाथ बेच पेट पाल रही है। आज वह नित सहस्रों गाय, भैंसे, बकरे और शूकर के रक्त की नदी बहा रही है। प्यारे भारत! तुझ में भयङ्कर परिवर्तन आ गया। जहाँ विद्या और धन प्राप्त कर लोग परोपकार करते थे, आज वह उसके द्वारा दूसरों को ठगने और सर्वस्व छीन लने का यत्न करते हैं। आज विद्या के ठेकेदार चोरी, जारी और दुष्कर्म के लिये शुभ घड़ी और जाप बताते फिरते हैं, तम्बाकू, गाँजा, चरस, मदिरा, माँस आदि के दोषों को संस्कृत के श्लोकों से ढाँप देते हैं।

सीता, सरस्वती जैसी विदुषि स्त्रियों को नित स्मरण करने वाली जाति ने आज अपने समाज की शोभा बढ़ाने वाली स्त्रियों को विद्या-लाभ से वञ्चित करके उन्हें पशु संज्ञा में मिला दिया है। युवतियों, निर्बल बालकों और छोटी-छोटी बालिकाओं को मनचले वृद्धों के हाथ पशु समान बेचा जा रहा है। हा! आज इस जाति में छोटे-छोटे बालक बालिकायें गृहस्थाश्रम को कलंकित कर रही हैं। एक-दो वर्ष की बालिकायें वैधव्य की अग्नि में जल रही हैं। यही विधवायें बहकाने से निकल भागती हैं। भागे भी क्यों नहीं? जब आप उनको सम्मान की दृष्टि से नहीं देखते तो वे चट मुसलमान और ईसाई हो जाती हैं, क्योंकि वहाँ उनका आदर है। इनकी रक्षा के लिये विधवा आश्रम खुल जाना चाहिये। बाल-विधवाओं का विवाह तो अवश्य ही कर देना चाहिये।

जो जाति कभी संसार की गुरु थी, आज वह अन्धकार अन्धविश्वास में मर रही है। जिसकी विद्या और कला कभी उन्नति के शिखर पर पहुँची थी, आज वह बेचारी दियासलाई और सुई के लिये दूसरों का मुँह तकती है। हाँ! जिस जाति में सामर्थ्यवान् दुर्बलों की रक्षा, सहायता करते थे, आज वह उनका रक्त चूस-चूस आनन्द मना रहे हैं। जहाँ शबरी जैसी भीलनी तप करती रही हों, जाबालि आदि ऋषिपद को प्राप्त हुये हों, वहाँ आज शूद्रों को अधिकार से वञ्चित कर प्रभु राम की शरण से निकाल स्वयम् ही यीशू व मुहम्मद की भेंट कर पीछे ''हाय दादा'' और ''हाय गोमाता'' कहकर सर पीटना होता है।

जिस जाति में कभी हरिश्चन्द्र जैसे वीर दानी थे, जो कि चील कौओं तक को प्रेम से आहार देती थी, आज वह अपने अनाथबालकों को कलेजे से लगा नहीं सकती, आज वह निर्दयी, निर्लज्ज होकर उन्हें विधर्मियों को सौंप रही है। क्या यह शर्म की बात नहीं है कि हम अनाथों की रक्षा न कर सके और उनकी रक्षा ईसाई और मुसलमानों

की हाथ से होवे। सहस्रों शिखा-सूत्र-धारी अपने पवित्र धर्म्म को तिलाञ्जलि दे प्रभु यीशू और मुहम्मद की गोद में चले जा रहे हैं। जो शेष हैं उन्हें भी पश्चिमी सभ्यता छैल-छबीली बनकर मोहित कर रही है। भगवन्। क्या अब ऋषि मुनियों की सन्तान अन्य जातियों के समान संसार पृष्ठ से लोप हुआ चाहती है। ऐ राम नाम लेवा जाति! यदि अपनी इस दुर्दशा व इस अधोगति को देख तेरे नेत्रों से अश्रुधारा न बह निकली, तो हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि तेरी रगों में मानों उनके वंश का रक्त ही नहीं रहा। भला कौन ऐसा भारत-जननी का लाल होगा जो ऐसे समय में यह न चाहता हो कि कोई हमारी कुप्रथाओं एवं कुरीतियों को रोक हमें धर्म-पथ पर लगा दे। हम इसे अनुभव करते हैं पर किसी में इतनी विद्या, इतना आत्मबल नहीं कि हर प्रकार से नष्ट-भ्रष्ट इस जाति की बिगड़ी को बनाने का साहस कर सके। हम तो स्वार्थ के वश फँसे हैं, हाँ में हाँ मिलाने वाले हैं, बन्दर-भभकी में आ जाने वाले, किञ्चित लाभ के लिये आत्मघात करने वाले, अपने नाम और प्रशंसा के गीत सुनने वाले हैं। यह कार्य तो हमारे जैसों का नहीं। यह तो किसी बाल ब्रह्मचारी, सत्यव्रतधारी, महात्यागी, अद्वितीय वेदवेत्ता, धर्म के नेता, ईश्वर के पूर्णविश्वासी, सच्चे तपस्वी का है, जो सुख-दु:ख निन्दा-स्तुति, मान-अपमान, प्रतिष्ठा व तिरस्कार, किसी ओर ध्यान न देकर परोपकारार्थ अपने सर्वस्व को तिलांजलि दे दे। ऋषि दयानन्द का नाम आज संसार में कौन नहीं जानता। ईश्वर के सच्चे भक्त ऋषि ने बाल्यावस्था से मृत्युपर्यन्त यदि कोई विचार किया तो केवल मनुष्यमात्र के कल्याण का, अपनी जाति के सुधार का, भारत के उद्धार का। इस धुन में ऋषि ने महान् कष्ट सहा, बड़ा परिश्रम किया, सहस्रों ग्रन्थों की छानबीन की, बड़ा तप किया। अन्त में ईश्वरीय ज्ञान के भण्डार वेदों के अमृतमय बूटी द्वारा उन्हें शान्ति प्राप्त हुई। इस संजीवन बूटी को लेकर दयानन्द संसार के प्राणीमात्र को अमृतपान कराने आये। वेदों के कर्म को जानकर ऋषि ने सिंहनाद से सोती हुई जाति को जगा दिया।

जब हम पश्चिमी सभ्यता की गोद में पल रहे थे, जब हमें लोग उपदेश दे रहे थे कि हमारे पूर्वज शराब पीने वाले, जुआ खेलने वाले, और हमारे वेद गड़रियों की गीत हैं, तब ऋषि ने आकर दर्शाया कि नहीं, हमारे वेद संसार की समस्त विद्याओं के भण्डार और ईश्वरीय ज्ञान हैं और हम ऋषि मुनियों की सन्तान हैं। हमारे राम और सीता जैसी महान् आत्माएँ संसार की किसी अन्य जाति ने आज तक उत्पन्न नहीं की। इस प्रकार ऋषि ने दिखला दिया कि प्राचीन इतिहास गौरवशाली था। ऋषि ने हमारा मुख पश्चिम से पूरब की ओर फेर दिया। आज हम में वेदों के लिये श्रद्धा उत्पन्न हो गई, आज हम में आत्म-सम्मान का भाव उत्पन्न हो गया और यह किसी जाति के जागने का पहला चिह्न है। ऋषि दयानन्द ने बतलाया कि वेदों के पठन-पाठन के बन्द होने तथा उनकी व्याख्या की शुद्ध-प्रणाली के क्षय होने से यह अन्धकार भारत और संसार में छाया। यह परमात्मा की वाणी मनुष्यमात्र के कल्याण के लिये है। इनका प्रचार करो, इनकी शिक्षा का सारे भूमण्डल में विस्तार करो। बालक-बालिकाओं को ब्रह्मचर्य धारण करा गुरुकुलों में भेजो। एक ईश्वर की पूजा करो। नित्य संध्या-हवन आदि पंचयज्ञ करो, वेदपाठ करो। अपनी जातीयता व संगठन के लिये एक अपनी लिपि देवनागरी का प्रचार करो। अपने साहित्य और इतिहास को सँभालो। इसी से अशान्ति और अन्धकार का नाश और आनन्द व सभ्यता का प्रकाश होगा। यही तुम्हारी मानसिक , शारीरिक, सामाजिक, सर्वप्रकार की उन्नति का मूल मन्त्र है। इसी से बालविवाह बन्द होकर वैधव्य दूर होगा। यही नहीं, ऋषि ने वेदों से बाल-विधवा विवाह को सिद्ध कर अबलाओं के विलाप की आग में तपते हुए भारत पर शान्ति का पानी छिड़का व ''शुद्धि'' को सिद्ध कर राम के भक्त बढ़ा दिये। पण्डे, पुजारी, साधु, मठधारी, नये मत-मतान्तर खड़े कर गुरु बन-बनकर लूटने वालों की पोल खोल और वेश्यानाच, मदिरापान, दुर्व्यसनों आदि कुरीतियों में धन लगाने का निषेध कर गौओं, अनाथों की रक्षा में, विद्या व धर्म-प्रचार में तन, मन, धन अर्पण करना सिखलाया। ऋषि ने आग को आग और राख को राख कहना सिखलाया। ब्राह्मण से लेकर शूद्र और विधर्मियों तक के लक्षण वेदों में दिखाकर मनुष्य के परखने की कसौटी हमें दे ऋषि ने हमें अपने सच्चे हितैषी और दम्भी, स्वार्थी को पहचान लेने का

अवसर दिया। अहा! लोग अपने हिताहित को पहचानने लगे। पर सत्य का प्रकाश होते ही स्वार्थी पाखण्डी घबराने लगे। उन्होंने जान लिया कि यदि सत्य का प्रचार और विद्या का विस्तार इसी प्रकार हुआ, तो हमारी दाल न गलेगी। चारों ओर से ऋषि के विरुद्ध स्वार्थियों ने चिल्लाना आरम्भ किया। उन्हें कृष्टानों का दूत प्रसिद्ध किया, नास्तिक कहा, गाली बकने वाला धूर्त कहा। हाँ! आज कुछ व्यक्ति कहते हैं कि दयानन्द ने हमारे देवी-देवताओं की निन्दा कर हमसे उनकी पूजा छुड़ाई। हमारी जात-पांत की बनी बनाई लकीर मिटा दी। हमारी स्त्रियों के कोमल हृदय में मिथ्या अधिकार का बीज बो हमारे घरों की शान्ति का नाश किया। पितरों के सम्मान तथा तीर्थ-यात्रा के लाभ से हमें वञ्चित किया। अजी बड़ी गड़बड़ी मचा दी।

परन्तु ऐ हिन्दू जाति! विचार दृष्टि से तो देख! निःसन्देह ऋषि दयानन्द ने तुझसे एक नहीं ३३ करोड़ देवी-देवताओं की पूजा छुड़वाई, पर इनके स्थान में क्या एक अपार अनन्त ब्रह्म की भक्ति का रस पान नहीं कराया, क्या वेदोक्त सन्ध्योपासन, हवन आदि यज्ञों की महिमा नहीं दर्शाई? निःसन्देह उन्होंने जात-पांत को तोड़ा, पर व्यभिचार के कारण तो यह वैसे ही निर्मूल हो गई है। इसके स्थान में गुण-कर्म-स्वभाव अनुसार वैदिक वर्णव्यवस्था का पता देकर कूड़ा-कर्कट व स्वार्थी अभिमानी को हटा उच्च पद पर सुयोग्य और देश-भक्त नियत करने का अवसरा दे क्या उन्नति का मार्ग ठीक नहीं कर दिया? स्त्री-जाति को निज-अधिकार का ज्ञान ऋषि ने दिया, परन्तु इसलिये कि वह विदुषी और इस योग्य बन सकें कि हमारे प्रत्येक कार्य में हमारी सहायक बनें न कि इसलिए कि हमारी शान्ति का नाश करें। मरे हुए पितरों का श्राद्ध उन्होंने छुड़ाया, परन्तु साथ ही जीवित माता-पिता, श्रेष्ठ साधु-संन्यासी, महात्माओं की सच्ची फलदायक पूजा की ओर क्या हमारा ध्यान बलपूर्वक नहीं आकर्षित किया? पर हा? प्यारी जाति! तू ऋषि के इन उपकारों के बदले उन्हें बुरा कहती है। ऐ हिन्दू जाति! क्या इसी प्रकार एक महान् सुधारक का स्वागत करना तूने सीखा है?

सोच तो! यदि तुझे मूर्तिपूजा बन्द करने की आवश्यकता नहीं, यदि तुझे यह वेदानुकूल प्रतीत नहीं होती है तो देवस्थानों में व्यभिचार और गँवार पण्डे-पुजारी, साधु और गुरुघण्टालों द्वारा जो अनर्थ हो रहा है या ताजिया व कब्रों पर राम नाम लेवा जाति जो रेवड़िया माँगती फिरती है, उसे तो बन्द करने की आवश्यकता है। यह तो वेदानुकूल नहीं। इसके बन्द करने का यत्न क्यों नहीं करती? यदि आर्य शब्द वेद-विरुद्ध नहीं तो इस श्रेष्ठ नाम को तू क्यों नहीं स्वीकार करती, यदि विधवा विवाह तुझे बुरा लगता है तो बालविवाह, बेमेल शादी बाजी और विधवाओं के कारण व्यभिचार और गर्भपतन, यह सब तुझे कैसे रुचता है? यदि मृतक-श्राद्ध खण्डन दुःख देता है, पुराणों की विधि का विरोध और श्राद्धों में होने वाली छीछालेदर तुझे कैसे रुचती है? या मुष्टण्डों को दान देना रुचता है तो अनाथों विधवाओं गौओं आदि की रक्षा-सहायता और देशहित कार्यों के लिये धन देना क्यों नहीं रुचता?

सज्जनों! सच तो यह है कि ऋषि का उद्देश्य किसी का दिल दुखाना था ही नहीं। पर क्या किया जाए, दुर्व्यसनों में फँसे लोगों को बिना उनका दोष दर्शाये यह कैसे उनसे छुड़ाया जाए। अरे, यदि धार्मिक सज्जन ऋषि दयानन्द धर्म रूपी पीव भरे फोड़े में नश्तर न चुभोते, खण्डन द्वारा सबके नाक के फोड़े न दुखाते, तो पाँच-पाँच सहस्र वर्षों से सोती हुई जाति क्या धोती झाड़ इतनी शीघ्र खड़ी हो जाती? यह उन्हीं महर्षि का प्रताप है कि बाज यह जानने की चेष्टा कर रहे हैं कि धर्म किस चिड़िया का नाम है। यह उन्हीं का प्रताप है कि लोग अपने ग्रन्थों से कूड़ा-कर्कट की छानबीन में लगे हैं, अर्थों की खैंचातानी कर रहे हैं। ऋषि के सोटे की चोट न पड़ती तो क्या यह धर्म की सभायें कभी देखने-सुनने में आतीं? पर हा दुर्भाग्य! लोग चेते भी तो उसी अत्याचार और स्वार्थ साधन के लिये, जिससे बचाने के लिये ऋषि ने इतना कष्ट सहन किया। आज लोग ऋषि दयानन्द को गाली देने में, ऋषि के स्थापित किये आर्य समाज जैसे हितैषी सेवक को जली-कटी सुनाने में, उनके शुभ कार्यों में रोड़ा डालने में आनन्द मना रहे हैं। भारतवर्ष में कितनी कुप्रथायें जारी हैं, कैसी घिनौनी कुरीतियों की लकीर पिट रही है। समय था कि इनके निवारणार्थ बल और लगाया जाता, पर नहीं। हिन्दू जाति तेरे गुरुघण्टालों की विद्या और बल तो धर्म का अखाड़ा

रचकर तुझे ठगने के लिये है। तेरे विद्वान् सत्य तो जानते हैं, दिल में मानते हैं, पर हा! ''स्वार्थ और अभिमान के वश में हो धन संचय करने और श्याम गीत सुनने की धुन में तेरे चित्त प्रसन्न करने को तेरी सीस कहकर अपना कार्य सिद्ध कर रहे हैं। जाप और पाठ के आश्रय रहते कलियुग महाराज की दुहाई देते। जहाँ चारा ज्यादा मिला, पहुँचकर हाथ मारा। यह हैं तेरे गुरुघण्टाल। यही लोग पहिले आर्यों के वेद, स्त्री-शिक्षा, सन्ध्या, हवन, शुद्धि, बालविवाह के विरोधी ब्रह्मचर्य के प्रचार की हँसी उड़ाते थे, पर जब देखा कि इनकी सच्चाई तेरे मन भायी और तू आर्यों से सहमत हो चली, झट उन्होंने इन बातों का विरोध त्याग-गीत गाना आरम्भ कर दिया। अरे हिन्दू जाति, तू जिनके हाथ में कठपुतली बन रही है, वह तुझे अन्धकार में रखकर तुझसे लाभ उठा रहे हैं। तुझ पर सत्य को प्रकाशित नहीं किया जाता। तुझसे वाक्छल किया जाता है। देख, तेरे साथ विश्वासघात किया जा रहा है।''

''जो हमारे दोषों को हमारे सामने ही प्रकाशित कर दे, वही हमारा सच्चा मित्र'' इस सिद्धान्त को सामने रख ऋषि के उपदेशों को सुन उनके ग्रन्थों का अध्ययन कर, एकान्त में बैठकर देश की आधुनिक दुर्दशा पर आठ आँसू रो। तब तू ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के उद्देश्य को समझेगी। संसार की छोटी-छोटी जातियां अपने आत्म-बलिदान करने वालों के प्रताप से उन्नति के शिखर पर चढ़ गई, पर ऐ हिन्दू जाति। तेरे विश्वासघाती गुरु-घण्टालों ने तुझे सहस्रों बार उठने से रोका, पर विचार के देख ले! इस बार यदि तू ऋषि दयानन्द के दर्शाये उन्नति के पथ पर न लगेगी तो तेरा भी पता न लगेगा। ३३ करोड़ से घटते-घटते अब २० करोड़ भी तो शेष न रही, जो रह गई उसे हड़पने को एक ओर पश्चिमी छैलछबीली सभ्यता और यीशू-मुहम्मद की मुक्ति-सेना है तो दूसरी ओर घर का विश्वासघाती धूर्तमण्डल और अनेक कुप्रथायें और कुरीतियाँ। चेत रे प्यारी हिन्दू जाति, चेत! नहीं तो तू इनमें पिस मरेगी। विश्वासघातियों को पहचान, देश की दुर्दशा के कारण और उनके विचारणार्थ साधनों को विचार और इन्हीं पर माला खटाखट फेर। वैदिक धर्म के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द की शरण ले। अपने हितैषी आर्यसमाज के काम में हाथ बंटा। देख, वह तेरी बुराई की जड़ खोदने और भलाई के बीज बोने में अपना तन, मन, धन तुझ पर न्योछावर कर रहा है। नित अनेक गुरुकुल, पाठशाला, गौशाला, अनाथालय, विधवा-आश्रम आदि स्थापित करता-वेद, सन्ध्या-हवन आदि पंचयज्ञ, वैदिक-संस्कार, शुद्धि, एकता, एकलिपि आदि का प्रचार करता है। इसी के काम में हाथ बंटा। इसी में तेरा कल्याण है।

ऐ हिन्दू जाति! चारों ओर से तेरे ऊपर आपदायें आ रही हैं। मुसलमान और ईसाई तुझको हड़प जाने की सोच रहे हैं। अब भी जाग जा, नहीं तो वैदिक प्राचीन सभ्यता, हमारी आर्य सभ्यता इस पृथ्वी से लोप हो जायेगी। हिन्दू-जाति की अवनति होते हजारों वर्ष बीत गये। पर घर की कलह अब भी वर्तमान है। तूने मिलकर काम करना नहीं सीखा है। तेरे घरेलू झगड़े तुझको आपस में मिलने से रोकते हैं। और इसका लाभ तेरे शत्रु उठाते हैं। यह आपस में लड़ने का समय नहीं है। यह समय है कि हम सब मिल कर के अपनी जाति की रक्षा करें। हमको संगठन करना होगा। और संगठन करना होगा हिन्दू-जाति के बिखरे टुकड़े का, सिख, जैन, बौद्ध, पारसी, आर्यसमाजी तथा सनातन-धर्मियों का। ये सभी हिन्दू जाति के हैं। हमको चाहिये कि थोड़े से समय के लिये भेद भावों को भूल जावें और सब मिलकर जाति की रक्षा करें। लड़ने का समय आपस में तभी होता है जबकि किसी शत्रु का डर न हो।

हिन्दू! भूल मत कर और अपने हितैषी को पहचान। आर्यसमाज ही तेरा हित करने वाला है। उससे मिलकर कार्य कर, उसे द्वेष की दृष्टि से न देख। आर्यसमाज का जन्म हिन्दू-जाति की रक्षा और भारतवर्ष की प्राचीन आर्यसभ्यता को स्थापित करने के लिये ही हुआ है। ऋषि दयानन्द को वैदिक सभ्यता से बढ़कर और कोई सभ्यता प्रिय नहीं थी। वह वैदिक सभ्यता ही प्राचीन हिन्दू-सभ्यता थी, जिस पर हम सब हिन्दुओं को इतना गर्व है।

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

गुरुकुल

- तपेन्द्र कुमार

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह को योग-दर्शन में योगांगों के प्रथम अंग 'यम' के रूप में स्वीकार किया गया है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका के उपासना विषय में यमों का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए लिखते हैं, ''इन पाँचों का ठीक-ठीक अनुष्ठान करने से उपासना का बीज बोया जाता है।'' द्वितीय अंग नियमों-शौच, सन्तोष, तप, स्वध्याय, ईश्वरप्रणिधान-को महर्षि यमों का सहकारी कारण लिखते हैं। यम-नियमों के पालन के बिना साधना में उन्नति नहीं हो सकती तथा सामाजिक उन्नति भी इनके बिना सम्भव नहीं है। इनकी पालना व्यक्तिगत तथा सामाजिक दोनों प्रकार से की जाती है। यमों का सम्बन्ध मुख्यत: समाज से है तथा नियमों का सम्बन्ध मुख्यत: व्यक्ति से है। इनका सम्बन्ध शरीर व मन दोनों से है। व्यवहार-काल में तथा व्यक्तिगत रूप से कई बार करणीय व अकरणीय का निर्णय करने में दुविधा हो जाती है, परन्तु यम-नियमों को सही रूप से समझने वाले को स्थिति स्पष्ट रहती है। जिसकी जितनी स्पष्टता होगी, उसकी प्रगति साधना में उतनी ही अधिक होगी व सामान्य जन का व्यवहार उतना ही स्पष्ट व योगाभिमुख होगा।

जीवन के लम्बे प्राशासनिक काल में अनेकों ऐसे अवसर आये, जहाँ सामान्यत: व्यक्ति अपने सिद्धान्तों से पतित हो सकता है, परन्तु परमात्मा की कृपा से अनुत्तीर्ण नहीं हुए, हाँ उत्तीर्ण के प्रतिशत में अन्तर तो आया। प्राशासनिक कार्य करते हुए भी यम-नियमों के पालन की प्रतिबद्धता बनी रही, फिर चाहे कितनी भी हानि की संभावना हुई हो, या हानि हुई हो। यह प्रतिबद्धता तथा जीवन के प्रति दृष्टिकोण कहाँ से प्राप्त हुआ? जब विचार करता हूँ तो पाता हूँ कि गुरुकुलीय जीवन का ही सर्वाधिक योगदान है।

गुरुकुल शुक्रताल के प्रथम प्रवेशित छात्रों में मैं भी था। मन में गुरुकुल शिक्षा के प्रति एक उत्साह था तथा अधिक से अधिक तप करने की भावना थी, तप करने में आनन्द आता था।

गंगा किनारे, प्रकृति की मनोरम छटा, थोड़े से मन्दिरों व धर्मशालाओं के पास गुरुकुल का भवन था, गाँव में अधिकतर झोंपडियाँ थी। गंगा के पार तरबूज, खरबूजे, ककड़ी, लौकी आदि फल-सब्जियाँ उगायी जाती थीं। जंगली जानवर, भेड़िये आदि जंगल में घूमते थे। एकान्त व नीरव स्थान था। गंगा दशहरा व कार्त्तिक पूर्णिमा पर मेला लगता था, गुरुकुल का उत्सव भी होता था, जिसमें हजारों नर-नारी सत्संग व यज्ञ का लाभ उठाते थे। पौराणिकों के गढ़ में एक मात्र वैदिक संस्थान था।

मनु महाराज ने कहा है-

ब्राह्म मुहूर्ते बुध्येत, धर्मार्थौ चनुचिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च।।

ब्राह्म मूहूर्त में-उठना ही आज असम्भव दिखायी पड़ता है। धर्म-चिन्तन आदि की तो बात ही कहाँ? केवल अर्थ चिन्तन ही चलता रहता है। गुरुकुल में रहते हुए छोटी आयु में यह श्लोक स्मरण नहीं था, परन्तु अर्थचिन्तन को छोड़कर शेष सब की पालना अनायास ही होती थी तथा लम्बे समय तक दिनचर्या की आवृत्ति रहने से परिपक्व हो गयी, आदत सी बन गयी और आगे के जीवन का आधार बन गयी। प्रात:काल जागरण, मन्त्रों का पाठ, शौच के लिए दूर जंगल में जाना, हाथ व पात्र की शुद्धि, स्वास्थ्य के लिए आसन, प्राणायाम, व्यायाम, ठण्डे पानी से खुले में स्नान, मन की शुद्धि के लिए सन्ध्या व यज्ञ तथा तदुपरान्त प्रातराश-यह दिनचर्या का अंग था। प्रात:कालीन मन्त्रों का अर्थ पता नहीं था, पुस्तक में पढ़ने बाद इतना तो ध्यान था कि परमपिता परमात्मा की उपासना कर रहे हैं। तब के स्मरण किये मन्त्र आज भी स्मरण हैं तथा उनका पाठ भी होता है। गुरुकुल में व्यायाम की ऐसी आदत पड़ गयी कि अब तक के जीवन काल में आसन, प्राणायाम, व्यायाम नहीं छूटे।

सर्दियों के दिनों में कई बार दौड़ लगाते जाते व गंगा जी में स्नान कर वापस दौड़ते गुरुकुल आ जाते। हरिद्वार में रहते गंगा जी में स्नान होता, ठण्ड का पता ही नहीं चलता

था। १९९८ में एक वर्ष इग्लैण्ड रहने का अवसर मिला, वहाँ सर्दी थी, पर गुरुकुल की आदत ऐसी कि पूरे वर्ष ठण्डे पानी से स्नान होता रहा। अहंकार तो था ही नहीं। गंगा जी को तैरकर पार करते, पलेजों से लौकी आदि सब्जियाँ माँगकर लाते तथा सभी कई दिनों तक खाते रहते। सन्ध्या व यज्ञ तो घर पर भी होता था, परन्तु घर पर सन्ध्या में निरन्तरता नहीं थी। गुरुकुल में सन्ध्या की निरन्तरता मिली तथा कुछ व्यवधानों सहित आज तक चल रही है। यज्ञ तो आज भी घर में दोनों समय होता है। यदि कोई यज्ञ-विरोधी मुझसे यज्ञ के विषय में शास्त्रार्थ करे तो मैं संभवत: आज भी उसे पूरी तरह सन्तुष्ट नहीं कर पाऊँ, परन्तु गुरुकुल में तथा घर में यज्ञ की निरन्तरता से संस्कारों की परिपक्वता के कारण मन में कभी यज्ञ के प्रति विपरीत भाव नहीं आया।

शारीरिक तपस्या तो सीखी ही गुरुकुल से। कटिवस्त्र व चादर तो पूर्ण वस्त्र थे। रजाई नहीं ओढ़ी, तख्त पर गद्दा नहीं बिछाया। तकिये तो थे ही नहीं। गर्मी में खुले आसमान तले रेत के ऊपर दरी बिछाकर निश्चिन्तता से सोते थे। जूते नहीं पहने जाते थे। हैण्डपम्प दो थे, जो हम खुद ही ठीक कर लेते थे। गुरुकुल की सफाई, पाकशाला की लकड़ियाँ फाड़ना आदि कार्य प्रसन्नता से किया जाता था। अब तो आर्यों में भी कई जगह सरनेम पूछकर जाति का पता लगाने का प्रयास होता दिखाई दे जाता है, परन्तु गुरुकुल में आचार्य से लेकर ब्रह्मचारियों व पाकशाला के सेवकों आदि की कोई जाति ही नहीं थी। पाकशाला-सेवक ब्रह्मचारियों के साथ प्रथमावृत्ति पढ़ता था। कोई ऊँच-नीच नहीं थी, सभी एक-दूसरे की सहायता करते थे। अपनी पढ़ाई की चिन्ता किये बिना बीमार ब्रह्मचारी की सेवा करना कर्त्तव्य था- मजबूरी नहीं।

नित्यं हिताहारविहारसेवी समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्त:।
दाता सम: सत्यपर: दयावान् आप्तोपसेवी च भवत्यरोग:।।

चरक संहिता में तो अरोग रहने के इतने उपाय बता दिये, परन्तु पिज्जा-बर्गर के युग में मॉल्स में, पिक्चर हाल में जाना ही विहार है, बस जल्दी-जल्दी वे शब्द रट लिये जा रहे हैं, जिनसे ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाया जा सके। विषयों में आसक्ति इतनी कि हाथ से मोबाइल छूटता ही नहीं तथा अपनी उम्र से पूर्व ही सभी विषयों का पता छात्र कर लेते हैं। आप्त के नाम पर पीढ़ी-परिवर्तन की दुहाई दी जाती है तथा अनुभव तो पुरातन पन्थी हो गया है। ऐसे में सत्य, क्षमा आदि कहाँ से जीवन में सीखने को मिलेगें, जब सिखाने वाले स्वयं ही इनसे अछूत हों। परन्तु गुरुकुल के प्रत्येक ब्रह्मचारी को चरक संहिता की अरोग रहने की यह कला व्यवहार से अनायास सिखाई जाती रही थी। प्रातराश में दुग्ध व दलिया सभी को मिलता था, गरीब और अमीर नहीं देखा जाता था, मात्रा भी लगभग नियत थी। दोपहर और साँय का भोजन दाल-सब्जी-चपाती के साथ पौष्टिक होता था। सांसारिक विषय तो कहीं दूर तक देखने को नहीं मिलते थे। मेले के अवसर पर भी ब्रह्मचारी मेले में घूमने जाने के उत्सुक नहीं होते थे, न हि उसके प्रति ज्यादा आकर्षण होता था। वृत्तियों का निरोध कैसे होता है, यह तो नहीं जानते थे, परन्तु गुरुकुल के परिवेश में वृत्तियों का निरोध स्वभावत: होता रहता था, दर्शन के सिद्धान्त पढ़े बिना भी।

आचार्यों एवं सन्यासियों का आगमन होता रहता था। उनकी सेवा का अवसर लेने की होड़ लगी रहती थी। स्वामी वेदानन्द जी महाराज को स्नान करने का बहुत शौक था, कई बाल्टी पानी से स्नान करते थे। हम हैण्डपम्प की हत्थी को पकड़ कूद-कूद कर बाल्टी भरते रहते थे, थकने पर दूसरा ब्रह्मचारी तैयार रहता था। आशीर्वाद मिलता था, जीवन जीने के रहस्य प्राप्त होते थे। देने का भाव, सुख-दु:ख में समानता का भाव, सत्य के प्रति झुकाव तो जैसे दिनचर्या का अंग थे। यह अलग बात है कि उनमें गति अलग-अलग थी, परन्तु महत्त्वपूर्ण यह था कि ये विचार जन्म लेकर मन में पनपने लगे थे। परिग्रह के नाम पर दो-तीन जोड़ी कपड़े, किताबें, आवश्यक बिस्तर के अलावा कुछ नहीं होता था। सत्य की पालना भी सामान्य विद्यालयों से कहीं ज्यादा थी। मुख्य कार्य ही अध्ययन था, सांसारिक विषयों की पुस्तकों-शाकुन्तलम्-आदि की पढ़ाई तो थी नहीं।

व्यक्ति की शारीरिक व मानसिक क्षमता से उसमें निडरता आती है-यह माना जाता है, सही भी है, परन्तु अभय का कारण तो आत्मिक बल ही होता है और वह

प्राप्त होता है ईश्वर प्रणिधान से। गुरुकुल में रहते किसी प्रकार का भय मन में व्याप्त नहीं था, क्योंकि परमपिता परमात्मा पर श्रद्धा थी एवं आस्था थी कि ईश्वर के रास्ते चलने वाले का बुरा नहीं हो सकता। सिद्धान्त तो उस समय स्पष्ट नहीं थे, परन्तु जीवन में जिये जा रहे थे। अहिंसा की परिभाषा सामान्यतया यह बना दी गयी है कि किसी भी प्राणी के प्रति हिंसा नहीं करना, जो हानि पहुँचा रहा है उसका भी विरोध नहीं करना-उसके प्रति भी हिंसा की भावना नहीं रखना। गुरुकुल में अहिंसा की विभिन्न परिभाषाओं का तो पता नहीं था, परन्तु प्रात: भ्रमण के समय, रात को सोते समय सभी ब्रह्मचारी कान तक लम्बी लाठी रखते थे तथा यह भावना नहीं थी कि रास्ते चलते कोई कुत्ता काटने आवे तो उससे अपना पैर बचाया ही न जावे व कटवा लिया जावे, बल्कि दण्ड का प्रयोग करके उसे भगाया जावे व अपनी हानि नहीं होने दी जावे। यदि कोई चोरादि आ जावे तो उसके सामने समर्पण नहीं करके उसे दण्ड से रोका जावे। कुत्ते व चोर के प्रति सुधार की भावना मन में रखनी है यह पता तो नहीं था, यह तो बाद में स्वाध्याय से पता चला, परन्तु मोटे रूप में अहिंसा का जो रूप गुरुकुलीय पद्धति में अनायास सीखा जा रहा था, वह जीवन जीने के लिए महत्त्वपूर्ण था, संभवत: सिद्धान्त के नितान्त विपरीत भी नहीं था।

ब्रह्मचारी बलदेव जी नैष्ठिक का बलिष्ठ शरीर एवं दबंग आवाज हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती थी। जब वे गुरुकुल के उत्सव पर हजारों की संख्या में उपस्थित श्रोताओं को अपने सारगर्भित उपदेश देते थे तो पंडाल में हर कोई शान्ति से उन्हें व केवल उन्हें ही सुनता था। उनको देखकर गृहस्थियों के मन में अपने पुत्रों को गुरुकुल में भेजने-ब्रह्मचारी बनाने की भावना जग आती थी। यही कारण था कि सैकड़ों की संख्या में गुरुकुल में ब्रह्मचारी पढ़ते थे। ब्रह्मचारी जी सबके प्रेरणा स्रोत थे तथा अधिकांश छात्र उन जैसा बलिष्ठ शरीर व भाषण कला प्राप्त करना चाहते थे।

रात्रिकालीन भोजन के बाद श्लोक-पाठ होता था, कुछ के अर्थ स्मरण थे, कुछ के नहीं थे। एक श्लोक गाते थे-

वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं च लक्ष्म्या,
सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेष:।
स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला,
मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्र:।।

- भर्तृ. वैराग्य.

सचमुच गुरुकुल में जो पहनते थे, जो पढ़ते थे, जो खाते थे, जो सोचते थे, जो व्यवहार करते थे-संसार की नजरों में वह प्रशंसनीय हो या न हो-उन सब से सन्तुष्ट ही नहीं थे, अपितु उससे अन्य को हेय दृष्टि से देखते थे। आत्महीनता की भावना नहीं थी, बल्कि आत्मसम्मान था, गर्व था। पीछे मुड़कर देखता हूँ तो यह परितोष पूरे जीवन में नजर आता है। मेरे पास दूसरे अधिकारियों की तरह धन-सम्पत्ति आदि तो नहीं है, मेरा रहन-सहन भी तथाकथित उच्च स्तरीय नहीं रहा है, परन्तु गुरुकुल से प्राप्त प्रेरणा से जीवन में सन्तोष तो रहा ही, चमक-दमक के प्रति आकर्षण नहीं रहा तथा आत्मसम्मान का भाव रहा। कभी ऐसा भी महसूस नहीं हुआ कि हमें भी दूसरों के रास्ते पर चलना चाहिये था, बल्कि यह भाव आया कि परमपिता परमात्मा की कृपा से यथासंभव पाप भी जानबूझकर नहीं कमाया तथा संस्कारों को भी दूषित होने से बचाया।

कमियाँ व्यक्तियों में हो सकती हैं, संस्थाओं में हो सकती हैं, परन्तु ऋषियों की बतायी गुरुकुल शिक्षा-पद्धति में कमियाँ नहीं हो सकतीं। यह पद्धति व्यक्ति में मानवीय गुणों का समावेश कर उसका निर्माण करती है, जिससे परिवार, समाज व राष्ट्र का सही निर्माण होता है। आज की शिक्षा-पद्धति जो केवल धन कमाने तक सीमित हो गयी है, अक्षर-ज्ञान जिसका ध्येय है, उससे नैतिकता का विकास नहीं हो सकता, फलत: व्यक्ति व समाज का सर्वांगीण विकास करने में यह सक्षम नहीं है। भौतिक व आध्यात्मिक दोनों प्रकार का समानान्तर विकास ही उच्च आदर्शयुक्त समाज का निर्माण कर सकता है जो गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति के उज्ज्वल पक्ष को अंगीकार कर ही संभव है। यदि ऐसा नहीं हुआ तो जिस गति से समाज में मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है, उसे रोका जाना असम्भव होगा तथा कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्घोष मात्र उद्घोष ही रह जावेगा। श्रेष्ठ व्यक्ति चिन्तित हैं, अपने-अपने सामर्थ्य अनुसार गुरुकुल पद्धति का प्रसार कर रहे हैं, परन्तु अर्थकरी विद्या की अवधारणा हो जाने से उनके प्रयास पूर्ण सफल नहीं हो पा रहे हैं। अत: गुरुकुल पद्धति की पुनर्स्थापना के लिए समाज के सहयोग के साथ-साथ सरकार का संरक्षण नितान्त आवश्यक है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री, परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाईन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

जिज्ञासा समाधान - १२१

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा - महोदय! जिज्ञासा-समाधान हेतु निम्न विषय है- १. परोपकारी पत्रिका मार्च (द्वितीय) २०१६ के पृष्ठ १७ में श्री कृष्ण जी ने शपथ में कहा कि ''अभिमन्यु का पुत्र जीवित हो जाये'' तो क्या धर्मात्मा, योगी, महापुरुषों के शपथ या वरदान से मरा हुआ व्यक्ति जीवित हो सकता है?

२. इसी माह की पत्रिका के पेज २२ पर ''आर्य अनार्य की बात'' विषय में शिवलिंग वस्तुत: यज्ञ वेदी से उठती हुई अग्नि-शिखा का द्योतक है। स्वयं ऋग्वेद में तेईस देवियों के नाम मिलते हैं। अत: शिव और देवी को अवैदिक कहना झूँठ और बेईमानी है।

जिज्ञासा यह है कि शिव, शिवलिंग और देवी शब्द के यहाँ कहने का क्या तात्पर्य है एवं ऋग्वेद में देवी शब्द का प्रयोग किस तात्पर्य या प्रयोजन को सिद्ध करता है। यह पौराणिक मान्यताओं के देवी शब्द का प्रयोजन तो नहीं है। कष्ट के लिये क्षमा।

- मुकुट बिहारी आर्य, १३/७७२ मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

समाधान- (क) मरे हुए को जीवित कर देना, यह बात असम्भव प्रतीत होती है। कोई योगी महात्मा ऐसा कर देता हो, यह बात भी असम्भव है। जब किसी शरीर से आत्मा-प्राण निकल गया हो, उसमें पुन: आत्मा व प्राण को डाल जीवित करना कभी नहीं हो सकता, यदि कहीं ऐसी घटनाएं मिलती हैं तो वे प्राय: कही-सुनी, असत्य, जनापवाद ही होता है। या जिस किसी मरे हुए को जीवित करने बात आती है, वह व्यक्ति मरा ही नहीं होता, उसके प्राण होते हैं और बाहर से मृतप्राय: दिखता है। ऐसी अवस्था में कुछ प्रयत्न विशेष से उसके प्राणों को संचालित किया जा सकता है।

आपने पूछा कि श्री कृष्ण ने अभिमन्यु के मरे हुए पुत्र को शपथ मात्र से जीवित कर दिया, क्या यह सत्य है? हमारे विचार में जब अभिमन्यु का पुत्र पैदा हुआ तो वह अश्वत्थामा द्वारा छोड़े हुए ब्रह्मास्त्र के प्रभाव में था। जिससे वह मृतप्राय: पैदा हुआ, पूर्णरूप से प्राण शरीर से नहीं निकले होंगे। ऐसी स्थिति में श्री कृष्ण के उपचार और पुण्य विशेष से उसके प्राण संचालित हो गये होंगे, ऐसा होने पर कृष्ण के विषय में प्रचलित कर दिया होगा कि श्री कृष्ण ने अभिमन्यु के मरे हुए पुत्र को जीवित कर दिया।

यदि श्री कृष्ण जी मरे हुओं को जीवित कर देते थे, तो महाभारत युद्ध में एक से एक उपकारी योद्धा मारे गये थे, उनको भी क्यों न जीवित कर दिया? अभिमन्यु को ही जीवित कर देते, जिससे इस आर्यावर्त को योग्य राजा मिल जाता अथवा भीमपुत्र घटोत्कच को जीवित कर देते, जिससे अतिशीघ्र कौरव सेना का संहार कर युद्ध को जल्दी निपटा देते। किन्तु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। यहाँ अभिमन्युपुत्र को जीवित करने की जो बात है, हमें तो यही प्रतीत होता है कि वह मरा हुआ पैदा नहीं हुआ अपितु मरे जैसा पैदा हुआ। मरे हुए और मरे जैसे में बहुत बड़ा अन्तर है। मरा हुआ आज तक कभी जीवित नहीं हुआ है और न होगा क्योंकि यह सृष्टिक्रम के विरुद्ध है। हाँ, मरे जैसा तो जीवित हो सकता है, क्योंकि वह अभी पूरी तरह से मरा नहीं है, अभी प्राण शेष हैं- ऐसे को बुद्धिमान् व्यक्ति अपने कौशल, औषध और पुण्य कर्मों से जीवित कर सकता है। ऐसी स्थिति को देखकर लोग कह देते हैं कि उसने मरे हुए को जीवित कर दिया।

महाभारत के इस प्रकरण में अभिमन्युपुत्र को मरा हुआ ही लिखा है और उसको जीवित करने वाले कृष्ण द्वारा अपने पुण्यों के बल पर जीवित किया हुआ लिखा है। यह प्रकरण हमें मिलावट-युक्त लगता है, वास्तविकता कुछ और रही होगी। अस्तु

(ख) शिव और देवी के अर्थ महर्षि दयानन्द ने किये हैं। शिव का अर्थ जगत्पिता परमात्मा परक करते हुए लिखते हैं- ''शिवु कल्याणे- इस धातु से शिव शब्द सिद्ध होता है।........जो कल्याणस्वरूप और कल्याण का करने हारा है, इसलिए उस परमेश्वर का नाम शिव है।''

-स.प्र.१।

देवी का अर्थ भी ईश्वर परक करते हुए लिखते हैं-

'दिवु' अर्थात् जिसके क्रीड़ा आदि अर्थ हैं, उससे देवी शब्द सिद्ध होता है.......सबका प्रकाशक, सबको आनन्द देने वाला।

– पञ्चमहायज्ञविधि

शिव और देवी इन दोनों शब्दों के अर्थ ईश्वर-परक हैं, प्रकरणानुरूप किन्हीं और के वाचक भी हो सकते हैं। वेद में जो ये शब्द आये हैं, इनका अर्थ सती और पार्वती के पति, गणेश तथा कार्तिकेय के पिता, भस्मधारी, नरमुण्डमालाधारी, वृषारोही, सर्पकण्ठ, नटवर, नृत्यप्रिय, नन्दा वेश्यागामी, अनुसूया धर्मनाशक, हस्तेलिंगधृक् महादेव नामक पौराणिक व्यक्ति और चारभुजा आदि से युक्त देवी कदापि नहीं है।

शिव और देवी-इनका अर्थ जो ऊपर लिखा, इस अर्थ के अनुसार तो ये वैदिक ही कहायेंगे, किन्तु इसके विपरीत किसी व्यक्ति वा स्त्री विशेष अर्थ में तो अवैदिक ही कहे जायेंगे। और ये कहकर कि शिवलिंग यज्ञवेदी से उठती हुई अग्नि-शिखा का द्योतक है, शिवलिंग को सिद्ध करना अपनी कोरी कल्पना के अतिरिक्त कुछ भी नहीं अर्थात् ये मिथ्या कल्पनामात्र है। यदि ऐसा है तो इस विषय में कोई आर्ष-प्रमाण प्रस्तुत करने की कृपा करें। आजकल कुछ विद्वान् इन पौराणिक गपोड़ों को अपनी कल्पना के आधार पर सही सिद्ध करने में लगे हैं। कोई गणेश को सही सिद्ध कर रहा है तो कोई विष्णु के चार हाथों की व्याख्या कर उसको उचित सिद्ध करने में लगा है। ऐसा करने से पौराणिक मान्यताओं को बढ़ावा ही मिलना है न कि पाखण्ड न्यून होने को।

श्रीमान् मनसाराम जी वैदिक तोप की पुस्तक "पौराणिक पोल प्रकाश" में इस कथा के विषय में विस्तार से लिखा है। इस कथा को जानकर कोई कैसे कह सकता है कि शिवलिंग अग्नि-शिखा का द्योतक है। यह तो शिव-पार्वती की अश्लील क्रियाओं के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इसलिए आर्यजन व्यर्थ की कल्पनाओं पर विश्वास न कर यथार्थ को स्वीकार कर अपने जीवन को उत्तम बनावें।

न्याय दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के द्वारा संचालित 'महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल' ऋषि उद्यान, अजमेर में वर्षों से संस्कृत व्याकरण और दर्शनों का अध्यापन कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। इसी क्रम में '**महर्षि गौतम**' द्वारा प्रणीत '**न्याय दर्शन**' का **आचार्य श्री सत्यजित् जी** द्वारा १ मार्च २०१७ से विधिवत् नियमित रूप से अध्यापन कराया जावेगा। यह दर्शन ९-१० महीनों में सम्पूर्ण हो जावेगा।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। समय-समय पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षाएँ भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास और भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार यथायोग्य सहयोग कर सकते हैं। माताओं व बहनों की निवास व्यवस्था पृथक् रहेगी। पढ़ने के इच्छुक आर्यजन कृपया, सम्पर्क कर पूर्व स्वीकृति ले लेवें।

सम्पर्क सूत्र – आचार्य सत्यजित् जी – ०९४१४००६९६१, समय रात्रि (८.४५ से ९.१५)

पता – ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर – ३०५००१ (राज.) **ई-मेल** – styajita@yahoo.com

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ नवम्बर २०१६ तक)

१. श्री किशोर काबरा, अजमेर २. श्री वृद्धिचन्द गुप्ता, जयपुर ३. श्रीमती मानसी कोहली, श्रीगंगानगर ४. सुश्री वेदा, हॉलैण्ड ५. श्री रघुवीर सिंह, सहारनपुर ६. श्री नरेन्द्र कुमार रस्तोगी, मुम्बई ७. श्रीमती मैत्री यति, उस्मानाबाद ८. श्रीमती शीलाबेन रामी, अहमदाबाद ९. डॉ. सत्यवीर सिंह, पानीपत १०. श्री धर्मवीर सिंह, नई दिल्ली ११. मा. दीपक, सिरसा, १२. श्री रामपाल सिंह, दिल्ली १३. डॉ. यदुवीर सिंह, पलवल १४. पं. स्वामी बिहारी, हॉलैण्ड १५. श्री देवमुनि, अजमेर १६. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर १७. श्री लक्ष्मीनारायण, गंगानगर १८. श्री रमेशचन्द आर्य, जीन्द १९. श्री सुरेन्द्र सिंह, नई दिल्ली २०. श्रीमती सरस्वती देवी, पटना २१. श्री आर्यन कुमार, पटना २२. श्री अनिल कुमार कालिया, गंगानगर २३. श्री मनोहरदास आर्य, नागौर २४. श्रीमती ओमकुमारी, अजमेर २५. श्री सार्थक अहुजा, गुरुग्राम २६. श्रीमती कमला, गुरुग्राम २७. श्री जगराम यादव, महेन्द्रगढ़ २८. श्रीमती रमा आर्या, महेन्द्रगढ़ २९. श्रीमती गीता देवी चौहान, अजमेर ३०. स्व. सुश्री. निर्मला कुमारी, अजमेर ३१. डॉ. कृष्णपाल सिंह शास्त्री, गुरुग्राम ३२. श्री रमनलाल आर्य, बुरहानपुर ३३. श्रीमती सावित्री देवी, सोनीपत ३४. श्रीमती यशोदारानी सक्सेना, कोटा ३५. श्री ओमप्रकाश आर्य, मथुरा ३६. श्री श्यामसुन्दर शर्मा, अजमेर ३७. श्रीमती पारुल व नवदीप चौहान, नई दिल्ली ३८. श्री रमेश चन्द आर्य व श्रीमती रेखा आर्या, नई दिल्ली ३९. श्रीमती निशा देवी व नागेन्द्र सिंह, नई दिल्ली ४०. श्रीमती पारुल तंवर, नई दिल्ली ४१. श्री प्रणवदेव आर्य व श्रीमती वर्षा आर्या, नई दिल्ली ४२. श्री गोपालकृष्ण सेठी व श्रीमती सुदर्शन सेठी, नई दिल्ली ४३. श्री बी.डी. उकुल, नई दिल्ली ४४. श्री अतुल कुमार, नई दिल्ली ४५. श्री संदीप व सुमित आनन्द, नई दिल्ली ४६. श्री सुरेन्द्र सिंह वर्मा, नई दिल्ली ४७. श्री मुकेश कुमार आर्य, नई दिल्ली ४८. ठा. विक्रम सिंह ट्रस्ट, नई दिल्ली ४९. श्रीमती मधु, नई दिल्ली ५०. श्री वेदप्रकाश आर्य, गुड़गाँव, हरि. ५१. श्रीमती निर्मला मोहिन्द्रा, नई दिल्ली ५२. श्रीमती मन्जु गुप्ता, विशाखापट्टनम् ५३. श्री महेन्द्र आर्य, मुम्बई ५४. श्रीमती पुष्पा आर्या व श्री सत्यानन्द आर्य, नई दिल्ली ५५. श्री प्रणव आर्य, नई दिल्ली ५६. श्रीमती वसुधा व श्री श्रुतिशील झंवर, मुम्बई, महा. ५७. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर ५८. श्री रमेश दत्त दीक्षित, बागपत, ५९. श्री कन्हैयालाल आर्य, भीलवाड़ा ६०. श्री निश्चय गोयल, अजमेर ६१. श्री इन्द्रप्रकाश यादव, उदयपुर ६२. श्री कपिल सोनी, पाली ६३. कु. उन्नति वर्मा, पाली ६४. श्री एम.एल.गोयल, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ नवम्बर २०१६ तक)

१. प्रशान्त शर्मा, अजमेर २. श्री रामलखन आर्य, झारखण्ड ३. श्री वृद्धिचन्द गुप्ता, जयपुर ४. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर ५. श्री जब्बरसिंह आर्य, सहारनपुर ६. श्री नरेन्द्र कुमार रस्तोगी, मुम्बई ७. श्री भरतलाल, पलवल ८. श्री अनुज सैनी, सहारनपुर ९. श्री ईश्वर सिंह, हरिद्वार १०. श्रीमती पुष्पा शर्मा, अलीगढ़ ११. श्रीमती हेमलता वर्मा, अजमेर १२. श्री प्रीतम सिंह आर्य, गाजियाबाद १३. डॉ. सतवीर सिंह आर्य, पानीपत १४. रामकुमार आर्य, सहारनपुर १५. नगभान सिंह आर्य, सहारनपुर १६. श्रीमती सन्तोष आर्या, सहारनपुर १७. श्री रुद्रदेव द्विवेदी, लखनऊ १८. आर्य समाज,

सोनीपत १९. श्रीमती वीना आर्या व श्रीमती शशि आर्या, गुडगांव २०. श्री प्रमोद श्रीवास्तव, गोरखपुर २१. श्री बुद्धराम तेवतिया, पलवल २२. श्रीमती मन्जुला आर्या, जबलपुर २३. सुश्री मनोरमा साहू, इन्दौर २४. श्रीमती सीता देवी, पलवल २५. श्रीमती प्रेम कवात्रा, पलवल २६. जोगेन्द्र कुमार आर्य, सहारनपुर २७. आनन्द शर्मा, अजमेर २८. माता जी, अजमेर २९. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ३०. तीरथराज, मथुरा ३१. श्री रमेश चन्द आर्य, जीन्द ३२. श्री दिलीप सिंह आर्य, कैथल ३३. श्री योगेश्वरदयाल, मुजफ्फरनगर ३४. श्री निशान्त, अजमेर ३५. श्री श्यामकुमार गर्ग, अजमेर ३६. श्री ब्रजलाल विधुरी, पलवल ३७. श्री प्रवीण माथुर, अजमेर ३८. श्री जयकरण कौशिक, दिल्ली ३९. श्री लक्ष्मी नारायण, गंगानगर ४०. श्रीमती शान्ति देवी चौहान, अजमेर ४१. श्री जगराम यादव, महेन्द्रगढ़ ४२. श्रीमती कमला तंवर, अजमेर ४३. श्री राजेश त्यागी, अजमेर ४४. श्री करण सिंह मौर्य, रोहतक ४५. श्री अरुण गौड़, अजमेर ४६. श्री उत्तम मुनि, शोलापुर ४७. श्रीमती रमा आर्या, महेन्द्रगढ़ ४८. श्री बिहारी लाल, गुडगांव ४९. श्रीमती नेहा भदवा, उदयपुर ५०. श्रीमती गीतादेवी चौहान, अजमेर ५१. श्रीमती निर्मला कुमारी, अजमेर ५२. डॉ. कृष्णपाल सिंह शास्त्री, गुरुग्राम ५३. श्रीमती सावित्री देवी, सोनीपत ५४. जे.पी. ट्रांसपोर्ट कं., मुम्बई ५५. श्री रिषभ गुप्ता, अम्बालाकैन्ट ५६. श्री ओमप्रकाश आर्य, मथुरा ५७. वेद मन्दिर सत्संग मण्डल, बिजनौर ५८. श्रीमती भगवती देवी मुरलीधर छप्पेरवाल, अजमेर ५९. श्रीमती ओमवती देवी, वल्लभगढ़ ६०. श्री प्रकाश किशोर खन्ना, अजमेर ६१. आत्मप्रकाश तनेजा, नई दिल्ली ६२. श्री अनिल गुप्ता, राँची ६३. इंजि. खुराना, हैदराबाद, तेलंगाना ६४. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर ६५. श्री जगदीश प्रसाद, हरित ६६. श्री वीरेन्द्रभान ६७. श्री बाबूलाल, मन्दसौर ६८.श्री दिनेश चंद्रवंशी, बैतुल ६९. श्री नारायण नागोराव कुलकर्णी, नांदेड़ ७०. श्री बाबूलाल जोशी, इन्दौर ७१. श्रीमती चन्द्रकिरण, जयपुर ७२. श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, जयपुर ७३. श्री रामकिशोर शर्मा, जयपुर ७४. श्री जयदेव शर्मा, जयपुर ७५. श्री निशान्त शर्मा, जयपुर ७६. श्री विनय लोढ़ा, जयपुर ७७. श्री जितेन्द्र गर्ग, जयपुर ७८. श्री राकेश लोहिया, जयपुर ७९. श्री प्रशान्त शर्मा, जयपुर ८०. श्री श्यामसुन्दर गुप्ता, जयपुर ८१. श्री नितिन अग्रवाल, जयपुर ८२. श्री अजय जैन, जयपुर ८३. रिषभ गुप्ता, अम्बालाकैन्ट ८४. श्री हरिप्रसाद उसावा, मुम्बई ८५. श्री हंसमुख भाई, मुम्बई ८६. श्री कमलेश भाटिया, बिजनौर ८७. श्रीमती चन्द्रकान्ता, अजमेर ८८. श्रीमती खुशबू, अजमेर ८९. श्रीमती शकुन्तला छपेरवाल, कोल्हापुर ९०. श्रीमती दीपशिखा क्षेत्रपाल, अजमेर ९१. श्रीमती गीता, प्रतापगढ़ ९२. श्रीमती शारदा, मंदसौर ९३. श्री दाऊदयाल, जयपुर ९४. श्री शैलेष अवस्थी, जयपुर ९५. श्री महावीर सिंह, जयपुर ९६. श्री विष्णु गुप्ता, जयपुर ९७. श्री के.के. गुप्ता, जयपुर ९८. श्री प्रेमस्वरूप अग्रवाल, जयपुर ९९. श्री रोशन लाल मुकेश कुमार, जयपुर १००. श्री हर्षनाथ तिवाड़ी, जयपुर १०१. श्री कन्हैयालाल हिरवानी, जयपुर १०२. श्री राधेश्याम शर्मा, जयपुर १०३. जब्बर सिंह राठौड़, जयपुर १०४. श्री पवन गुप्ता, जयपुर १०५. श्री श्यामसुन्दर बिस्सा, जयपुर १०६. श्री रवीन्द्र धारवार, जयपुर १०७. श्रीमती उषा देवी मिश्र, जयपुर १०८. श्रीमती गीता अग्रवाल, जयपुर १०९. श्री विनोद गुप्ता, जयपुर ११०. श्री गौरव माथुर, जयपुर १११. श्रीमती राखी देवी, जयपुर ११२. श्रीमती सीता देवी वर्मा, अजमेर ११३. श्री सम्पत कुमार व्यास, भीलवाड़ा ११४. श्रीमती वीना शारंगी, कोटा ११५. श्री सोहनलाल कटारिया, अजमेर ११६. श्री आदित्यप्रकाश गुप्ता, सहारनपुर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

आचार्य धर्मवीर कृतज्ञता-सम्मेलन

-प्रभाकर

ऋषि मेला- आर्यों का महाकुम्भ, विद्वानों का सम्मेलन, ऊर्जा का भण्डार, सैद्धान्तिक चर्चा का मंच- और भी अनेक नामों से आर्यजनों के हृदय में जो आशा का केन्द्र बना हुआ है, इस ऋषि मेले को इन उपाधियों से विभूषित कराने वाले महामनीषी को इसी मंच से एक दिन श्रद्धाञ्जलि देनी होगी, ये कल्पना से परे था।

ये इतिहास का नियम है या शायद समाज की सहज प्रवृत्ति कि अमूल्य वस्तु अप्राप्त होने पर ही बहुमूल्य बनती है। व्यक्ति की महानता, उसकी उपयोगिता उसके न होने पर ही अनुभव में आती है। एक ऐसे ही महामानव, संन्यासी, दार्शनिक, ऋषितुल्य व्यक्तित्व के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिये आयोजित कृतज्ञता सम्मेलन का चित्रण ही इस लेख का विषय है।

आचार्य धर्मवीर जी को मैं केवल एक विद्वान् कहूं तो ये ना मुझे स्वीकार्य है और ना ही पाठकों को। वे शास्त्रों के जादूगर थे। वेद की ऋचाओं का व्याख्यान करते समय वेद-मन्त्रों के राजमार्ग पर चलते-चलते शास्त्र, उपनिषद्, व्याकरण, निरुक्त, ब्राह्मण-ग्रन्थ, आयुर्वेद, कालिदास, पंचतन्त्र, गीता, मनुस्मृति और हास्य-व्यंग्य के गलियारों से होते हुये कब पुन: उसी राजमार्ग पर ले आते-पता ही नहीं चलता। उठने से लेकर सोने तक, हँसने से लेकर रोने तक उनकी पूरी दिनचर्या ही वेद-शास्त्रों से ओत-प्रोत थी। वेद की ऋचायें और दर्शन-व्याकरण के सूत्र ही उनके खिलौने थे। उन्हीं से खेलना, उन्हीं से मनोरंजन करना उनका स्वभाव था।

सिद्धान्त उनके मस्तिष्क में कितने स्पष्ट थे, इसके लिये एक ताजा संस्मरण उपयोगी होगा। इसी वर्ष के ऋषि मेले का आमन्त्रण देने के लिये मैं भी आचार्य जी के साथ था। एक घर पर गये तो गृहस्वामी ने मीमांसा दर्शन की शंका उपस्थित कर दी। शंका ये थी कि ''मीमांसा दर्शन में पशुबलि की चर्चा है, तो क्या हमारे शास्त्र बलि प्रथा का विधान करते हैं?'' आचार्य धर्मवीर जी ने सहजता से कहा कि ''मैंने दर्शनों को गुरमुख से नहीं पढ़ा और ना ही मैं कोई बड़ा विद्वान् हूँ।'' बार-बार पूछने पर बड़ी सहज भाषा में सटीक उत्तर देते हुए बोले कि ''मीमांसा दर्शन कर्म-काण्ड का नहीं, बल्कि वाक्य-शास्त्र है और व्याक्यार्थों को समझने के लिये जो कार्य कर्मकाण्ड में प्रचलित थे, वे उदाहरण के रूप में दिये गये। इसलिये मीमांसा में बलिप्रथा का विधान नहीं है।'' ये घटना उनकी विद्वत्ता और सरलता दोनों का उदाहरण है।

ऐसे अतुलनीय शास्त्रवारिधि के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने देश के कोने-कोने से विद्वान् व आर्यजन एकत्रित हुये। इस सम्मेलन का आयोजन ऋषि मेले के दूसरे दिन अर्थात् ५ नवम्बर की शाम को रखा गया। मंच और पंडाल दोनों ही भरे हुये थे। सत्र का संयोजन डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी कर रहे थे। वक्ता हो या श्रोता सब के हृदय वेदना से भरे हुए थे। जो मञ्च कभी आचार्य धर्मवीर जी से सुशोभित होता था, जिस मञ्च की सम्पन्नता ही आचार्य प्रवर पर निर्भर थी, आज ये मञ्च उस आचार्य को श्रद्धाञ्जलि देने के लिये मजबूर था। ईश्वर की व्यवस्था और प्रकृति के नियम के सामने मनुष्य का सामर्थ्य कितना छोटा है-ये आज सभी अनुभव कर रहे थे।

सम्मेलन के प्रारम्भ में कुछ पुरस्कार व सम्मान विद्वानों और कार्यकर्त्ताओं को दिये गये। उसके बाद परोपकारिणी सभा के संरक्षक व आचार्य धर्मवीर जी के पितातुल्य श्री गजानन्द आर्य जी की लिखित संवेदना उनके पुत्र श्री महेन्द्र आर्य जी ने पढ़कर सुनाई। अस्वस्थता के कारण वे स्वयं तो उपस्थित नहीं हो पाये, किन्तु उनके हृदय का कष्ट उनके पत्र से झलक रहा था। इसके बाद सभा के सम्माननीय कोषाध्यक्ष श्री सुभाष नवाल जी ने अपने हृदय के भाव प्रकट किये। श्री सुभाष नवाल जी की पीड़ा को समझने के लिये आचार्य धर्मवीर जी के लिये किया गया उनका सम्बोधन ही पर्याप्त होगा-

''आचार्य धर्मवीर जी! परोपकारिणी सभा के प्राण! मेरे मानस पिता! मेरे दयानन्द! किन शब्दों में उनका उल्लेख करुँ, कुछ समझ नहीं आता।'' ये मात्र शब्द नहीं हैं किसी असहनीय आघात के पश्चात् अनायास ही निकली एक चीख है, जो सहज ही धर्मवीर जी की दिव्यता को प्रकट करती है। और ये वेदना हर उस कार्यकर्त्ता के मन में है, जिसने उस आचार्य के पितृतुल्य निर्देशन में पुत्र की भांति कार्य किया है।

'उनका जाना अपूरणीय क्षति है'- यह वाक्य किन्हीं

स्थानों पर भावुकतापूर्ण या औपचारिक हो सकता है, पर आचार्य धर्मवीर जी के लिये शत-प्रतिशत सत्य है। विद्वान् की पूर्ति विद्वान से, वक्ता की वक्ता से, लेखक की लेखक से, और प्रचारक की पूर्ति प्रचारक से हो सकती है, अधिकारी का स्थान भी अधिकारी से भरा जा सकता है, पर एक पिता का स्थान.........? परोपकारिणी सभा और ऋषि उद्यान आज जिन ऊँचाइयों पर है, उसके पीछे विद्वान् के साथ-साथ धर्मवीर जी की पिता के रूप में बहुत बड़ी भूमिका है। इसके लिये सुभाष जी द्वारा कही गई एक और पंक्ति मैं यहाँ लिखना चाहूँगा-''उनका असमय चले जाना ऐसा लगता है, जैसे कोई उंगली पकड़कर चलना सिखाये और रास्ते में छोड़कर चला जाये।''

उसके बाद सभा के संयुक्त मन्त्री व आचार्य जी के साथ परिवार की तरह जुड़े रहे डॉ. दिनेशचन्द्र जी ने अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। यूं तो जो भी उनसे मिला, उनके परिवार का हिस्सा बन गया, पर डॉ. दिनेशचन्द्र जी से उनका सम्बन्ध अतिघनिष्ट था। शास्त्र की भाषा में कहा जाये तो ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की सार्थकता आचार्य धर्मवीर जी में स्पष्ट देखने को मिली। श्रीमती ज्योत्स्ना जी से जो भी मिलने आया, उसके मुख से ये भाव स्वत: ही व्यक्त हो जाता था कि आचार्य धर्मवीर जी आपसे अधिक हमारे परिवार के सदस्य थे। जिसने भी उनको निकट से देखा है, वो जानते हैं कि आचार्य जी ने अपने परिवार पर कम और आर्यसमाज व ऋषि के कार्य पर अधिक ध्यान दिया, या यूं कहूँ कि पूरा जीवन ऋषि दयानन्द के लिये ही जिया।

आई.आई.आई.टी. हैदराबाद के प्रोफेसर श्री शत्रुञ्जय रावत जी ने अपना संस्मरण सुनाया। ''जिन दिनों आचार्य जी की आर्थिक स्थिति अत्यन्त कमजोर थी, उन दिनों मेरे पिता जी ने उन्हें संस्कार के बहाने बुलाकर आर्थिक सहायता करनी चाही। संस्कार के बाद पिता जी ने जो दक्षिणा दी, उसका पता मुझे तब चला जब मेरे पास परोपकारी पत्रिका आने लगी। उन्होंने अपनी दक्षिणा से मुझे परोपकारी का आजीवन सदस्य बना दिया। मेरे पिता जी द्वारा दी गई दक्षिणा मुझे आशीर्वाद के रूप में आज तक मिल रही है।''

परोपकारिणी सभा के इतिहास में ऋषि दयानन्द को पहली बार ऐसा प्रतिनिधि मिला, जिसने दयानन्द के अधिकार को अक्षुण्ण रखा। सभा को अपना घर माना, सभा के कार्य को अपना कार्य मानकर किया, सभा पर हुये आक्षेप को अपनी गरिमा का प्रश्न बना लिया। सभा के लाभ में प्रसन्नता, हानि में दु:ख, मानो परोपकारिणी सभा और आचार्य धर्मवीर जी एक-दूसरे का पर्यायवाची थे। सभा का नाम सुनते ही आचार्य धर्मवीर जी की छवि मन में सहज ही उभर आती थी।

हैदराबाद से प्रो. बाबुराव म्हेत्रे जी भी अपने कुछ संस्मरण सुनाने को उद्यत हुये, परन्तु रुंधा हुआ गला और आंखों से अनवरत बहती अश्रुधारा ने ही वो सब कह दिया जो वाणी से कहा जाना असम्भव था। म्हेत्रे जी अपनी बात अधूरी ही छोड़कर भीगी आंखों से वापस बैठ गये। उसके पश्चात् परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओममुनि जी के सुपुत्र श्री श्रुतिशील जी ने उपस्थित आर्यजनों से ये अपील की कि आचार्य धर्मवीर जी ने जो प्रकल्प प्रारम्भ किये, उनके सुचारु संचालन में लगभग १२ लाख रु. का मासिक व्यय होता है, एतदर्थ परोपकारिणी सभा द्वारा बनाई जा रही ''आचार्य धर्मवीर स्थिर निधि'' में अपना अधिकाधिक योगदान दें।

आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा, श्री उग्रसेन राठौर, डॉ. रघुवीर जी वेदालंकार, डॉ. रामचन्द्र जी, डॉ. नयन कुमार आर्य आदि ने भी अपने आचार्य के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश जी ने रोषपूर्ण शब्दों में कहा कि ''आचार्य धर्मवीर जी जैसा दार्शनिक हमने इतनी आसानी से कैसे खो दिया? हमें अपने विद्वानों की सुरक्षा करनी चाहिये।'' आचार्य जी के अनन्य सहयोगी एवं इतिहास के मर्मज्ञ प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने आचार्य जी के पितृकुल व मातृकुल की राष्ट्रबलिदानी परम्परा पर प्रकाश डाला। स्वामी सम्पूर्णानन्द जी की पीड़ा थी कि एक-एक करके हमारे बीच से आर्य विद्वान् जा रहे हैं, पर हम इसे गम्भीरता से नहीं समझ पा रहे। आने वाले समय में हम डॉ. धर्मवीर जी से अधिक ना सही पर उनके बराबर विद्वत्ता वाला कोई व्यक्तित्व पैदा कर सकें तो ये हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। परोपकारिणी सभा के कार्यकारी प्रधान और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने आचार्य जी से अपने विद्यालयीय मैत्री सम्बन्धों की चर्चा करते हुये उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला।

सम्मेलन के अन्त में आचार्य धर्मवीर जी के जीवन पर एक छोटा-सा वृत्तचित्र (डॉक्यूमेन्ट्री) दिखाया गया।

उसमें आचार्य जी द्वारा परोपकारिणी सभा के लिये किये गये कार्यों को क्रमवार तरीके से प्रस्तुत किया गया। जिस समय आचार्य जी परोपकारिणी सभा के सम्पर्क में आये, तब सभा की स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी। कार्यालय के औपचारिक कार्यों का वहन भी जैसे-तैसे होता था। फिर आचार्य जी ऋषि उद्यान में आने लगे। ऋषि उद्यान में उस समय भवन के नाम पर सरस्वती भवन और कुछ कोठरियाँ थीं। ऋषि मेले का आयोजन केवल एक औपचारिक कार्य था। पर आज इस आयोजन में तीन हजार के लगभग पंजीकरण होते हैं। आचार्य जी आकर आश्रम की झाड़ियाँ साफ करते। आश्रम में साधुओं के रहने की व्यवस्था की। आर्यसमाज के प्रचारकों और विद्वानों के रहने व खाने-पीने की व्यवस्था भी की। धीरे-धीरे ऋषि उद्यान का परिचय बढ़ने लगा।

प्रात:काल नित्य उपनिषद् के प्रवचन व यज्ञ का प्रारम्भ किया। पौरोहित्य व प्रचार आदि के लिये जहाँ भी जाते, वहाँ सभा की ही बात करते। परोपकारी पत्रिका के सदस्य उन दिनों उंगलियों पर गिने जा सकते थे। फिर आचार्य जी के सम्पादकत्व में परोपकारी ने जिन ऊँचाइयों को छुआ, वह सर्वविदित है। आश्रम का वर्तमान स्वरूप उस आचार्य के अथक परिश्रम का प्रत्यक्ष प्रमाण है। ऋषि उद्यान का एक-एक पौधा उस माली ने अपने पसीने से सींचा है। परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित गुरुकुल की स्थापना उसी कर्मयोगी के बृहत् चिन्तन का ही परिणाम है।

उस महान् दूरदर्शी, महान् मानवशिल्पी ने केवल पांच-सात लोगों से शिविरों का आरम्भ किया। प्रशिक्षक का कार्यभार वे अकेले ही सम्भालते थे। आज वही शिविर वर्ष में दो बार आयोजित होता है, और प्रतिभागियों की संख्या लगभग २५० होती है। ये समृद्धि, ये भव्यता, ये विशालता यूँ ही नहीं आई। इस निर्माण के लिये आर्यसमाज को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है, एक पूरा जीवन इस महायज्ञ में आहूत हुआ है।

लिखने को तो इतना लिखा जा सकता है कि लिखते-लिखते स्याही और कागज दोनों ही कम पड़ जायें, पर इस विशाल व्यक्तित्व के पीछे भी एक नींव छिपी है। इस नींव को भुलाकर ये विवरण अधूरा ही रहेगा।

उस नींव का नाम है- श्रीमती ज्योत्स्ना। सम्पादक शिरोमणि श्री भारतेन्द्रनाथ जी की ज्येष्ठ पुत्री। बचपन से ही जो वैदिक साहित्य की पुस्तकों में पली-बढ़ी हों। "वेद मन्दिर" ही जिनका घर था। वेद की पुस्तकें ही उनके लिये खिलौने थीं और उन्हें बंडल बनाकर डाकघर तक पहुँचाना ही उनका खेल। छोटी-सी आयु में ही उन्होंने पुस्तकों का संशोधन करना प्रारम्भ कर दिया। सम्पादन की कला उन्हें विरासत में मिली, विद्वानों की संगति और उच्च बौद्धिक सामर्थ्य उनके लिये सहज प्राप्य था। वह स्वाभाविक विदुषी आचार्य धर्मवीर जी की जीवन संगिनी के रूप में जीवन भर उनकी सारथीवत् रहीं। घर की आन्तरिक व्यवस्था से लेकर बेटियों की उच्च शिक्षा-व्यवस्था तक, और यहाँ तक कि आर्थिक तंगी के दिनों में अपनी शैक्षणिक योग्यता का परिचय देते हुये घर को आर्थिक दृष्टि से भी सम्भाला। आचार्य जी इतना बृहत् कार्य कर पाये, उसका सबसे बड़ा कारण था- श्रीमती ज्योत्स्ना जी का हर दृष्टि से सक्षम होना। आज भी आचार्य जी के प्रचार कार्यक्रमों की व्यवस्था व उनके रेल आरक्षण जैसे कार्य भी श्रीमती ज्योत्स्ना जी ही करती थीं। उनकी योग्यता को देखते हुए उन्हें परोपकारिणी सभा का सदस्य चुना गया।

सभा की प्रथम महिला सदस्य- परोपकारिणी सभा के इतिहास में पहली बार किसी महिला को सदस्य के रूप में चुना गया। इसका कारण उनका धर्मवीर जी की धर्मपत्नी होना नहीं है, अपितु उनकी बौद्धिक, सैद्धान्तिक व प्राशासनिक योग्यता है। ऋषि दयानन्द ने बौद्धिक दृष्टि से स्त्री व पुरुष को समान ही माना है। बराबर अधिकार दिलाने की वकालत भी प्रथमत: ऋषि दयानन्द ने ही की। श्रीमती ज्योत्स्ना जी ने अपनी योग्यता के बल पर ऋषि के कार्य में अपना योगदान दिया है। सभा और उसके कार्यों व उद्देश्यों से ज्योत्स्ना जी का आत्मिक जुड़ाव लम्बे समय से रहा है। आचार्य धर्मवीर जी के बाद सभा एक पिता की जो कमी अनुभव कर ही थी, वो कमी बहुत कुछ अंशों में श्रीमती ज्योत्स्ना जी ने एक माता के रूप में पूरी की है।

ये छिपी हुई नींव आचार्य श्री का सबसे बड़ा बल था। इस कृतज्ञता सम्मेलन के विवरण का समापन करते हुए ये अनुभव कर रहा हूँ कि हम सब आर्य-जन, ये आर्य समाज, ये राष्ट्र आचार्य प्रवर का कृतज्ञ तो है ही, साथ ही इस व्यक्तित्व को निखारने में श्रीमती ज्योत्स्ना जी का भी कृतज्ञ है, ऋणी है।

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्त्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

२. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरितः

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

३. इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

४. आत्म कथा- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य - रु. १५/- पृष्ठ संख्या - ४८

५. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

संस्था - समाचार

०१ से १५ नवम्बर २०१६

यज्ञ एवं प्रवचन- ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्दकृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद-प्रवचन होता है। रविवार प्रात:काल विशेष-यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर- निवासी आर्य-सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं तथा अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। अतिथि-यज्ञ के होता के रूप में दान देने वाले यजमान यदि ऋषि उद्यान में उपस्थित होते हैं तो उनके जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगाँठ, सम्बन्धियों की पुण्य-तिथि एवं अन्य अवसरों से सम्बन्धित विशेष मन्त्रों से आहुतियाँ भी दिलवायी जाती हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और सोमवार से शुक्रवार तक 'उपदेश मंजरी' पुस्तक का पाठ एवं चर्चा होती है। शनिवार सायंकाल वानप्रस्थी साधक-साधिकाओं द्वारा प्रवचन होता है। प्रत्येक रविवार को प्रात:काल के प्रवचन में समसामयिक सामाजिक, राष्ट्रीय घटनाक्रमों पर व्याख्यान होता है। रविवार सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर व्याकरण, दर्शन, रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिनमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं। ऋषि उद्यान के प्रांगण में प्रतिदिन प्रात: और सायं आर्यवीर दल की शाखा योग्य शिक्षकों के द्वारा लगायी जाती है, जिसमें आसन, प्राणायाम, जूडो-कराटे, रस्सा, मलखम्भ, जिमनास्टिक आदि विद्याओं को सिखाया जाता है। ऋषि उद्यान स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती भवन में दयानन्द चित्र दीर्घा एवं वस्तु प्रदर्शनी को देखने तथा यज्ञ-प्रवचन से लाभ लेने के लिए देश के विभिन्न भागों से स्त्री-पुरुष आते रहते हैं।

भव्य ऋषि-मेला सम्पन्न-गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी यह ऋषि मेला हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। ३ नवम्बर गुरुवार को ही बड़ी संख्या में ऋषि-भक्त आ चुके थे। प्रतिदिन प्रात: काल ५ बजे आसन-प्राणायाम-ध्यान-उपासना से मेले की दिनचर्या का आरम्भ होता था। दोनों समय ऋग्वेदपारायण यज्ञ मेले का मुख्य आकर्षण रहा। तत्पश्चात् विभिन्न सम्मेलन तीनों दिन पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार ही हुए। प्रथम दिन ध्वजारोहण के पश्चात् गो-रक्षा, राष्ट्र-निर्माण में आर्यसमाज की भूमिका, धर्मान्तरण-समस्या और समाधान आदि विषयों पर विद्वानों के ओजस्वी व्याख्यान हुए। दूसरे दिन शिक्षा नीति-देश का भविष्य, महर्षि दयानन्द के विचारों की प्रासंगिकता विषय के अन्तर्गत विद्वान् वक्ताओं ने विभिन्न राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान प्रस्तुत किये। आचार्य धर्मवीर जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए एक सत्र का आयोजन हुआ। तीसरे दिन युवा सम्मेलन में युवाओं और गुरुकुल सम्मेलन में गुरुकुल के आचार्यों, ब्रह्मचारियों ने भाग लिया। तीनों ही दिन भजन, प्रवचन के कार्यक्रम भी बीच-बीच में होते रहे। इस बार वेद-गोष्ठी में ३० वक्ताओं ने भाग लिया और 'दयानन्द-दर्शन की वेदमूलकता' विषय पर अपने सारगर्भित लेखों का वाचन किया। आर्यवीर दल और आर्य वीरांगना दल के कार्यक्रमों ने लोगों को बहुत आकर्षित किया। महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रयोग की गई गये वस्तुओं और पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी का आगन्तुकों ने लाभ उठाया। वैदिक-साहित्य, यज्ञपात्र, यज्ञसामग्री, आयुर्वेदिक औषधियों के विक्रेताओं के द्वारा अनेक स्टॉल लगाये गये थे। देश के विभिन्न प्रान्तों से लगभग ३,००० स्त्री-पुरुषों और बच्चों ने भाग लिया। अजमेर नगर और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से भी प्रतिदिन सैकड़ों स्त्री-पुरुष मेले में आकर विभिन्न कार्यक्रमों में सम्मिलित हुए। ऋषि उद्यान को विद्युत झालरों, ओम ध्वज, महर्षि दयानन्द के बड़े-बड़े चित्रों और सूक्तियों वाले बैनरों से सजाया गया था। मेले में सभी स्त्री-पुरुषों, बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बाहर से आने वाले सभी संन्यासियों, ब्रह्मचारियों, विद्वानों, ऋषि-भक्तों के लिये आवास, ऋतु अनुकूल बिस्तर, भोजन, स्नान आदि के विशेष प्रबन्ध किये गये थे। गुरुकुल के

ब्रह्मचारियों और ऋषि उद्यान में निवास करने वाले सभी आश्रमवासियों ने विभिन्न कार्यों को अलग-अलग समिति बनाकर कुशलतापूर्वक सम्पादित किया।

ऋषि मेले के उपरान्त प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम महर्षि दयानन्दकृत ऋग्वेदभाष्य के एक मंत्र की चर्चा करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि हमारे जीवन के अधिकांश व्यवहार अग्नि के बिना सम्भव नहीं हैं। सबसे बड़ी अग्नि सूर्यरूप में है, जिससे संसार में ताप और प्रकाश होता है। बिना ताप के मनुष्यों और पशु-पक्षियों के शरीर की विभिन्न क्रियाएँ रुक जायेंगी और जीवन बहुत कठिन या असम्भव हो जायेगा। वनस्पतियों, पेड़-पौधों, फल, फूल, फसलों का सूर्य की अग्नि के बिना उगना और वृद्धि करना असंभव है। हमारे लिए अन्नादि की व्यवस्था कृषि से होती है। कृषि-कार्य भी सूर्य की अग्नि से ही होता है। यह अग्नि प्रकृति अर्थात् सत्व, रज और तम से उत्पन्न हुई है। चेतन परमात्मा ही इस बड़ी अग्नि और प्रकाश के स्रोतरूप सूर्य को प्रकृति से उत्पन्न करता है, वही इसका निर्माता है। सब मनुष्यों को इस सूर्य को जानकर अपने सब कार्य सिद्ध करने चाहियें।

समसामयिक राष्ट्रीय घटनाक्रम की चर्चा करते हुए आचार्य जी ने कहा कि वर्तमान में प्रधानमन्त्री द्वारा ५०० और १००० रुपये के नोट को कानूनी रूप से चलन से बाहर करना एक साहसिक और निर्णायक कदम है। इससे काले धन पर अंकुश लगेगा। मेहनत और ईमानदारी को प्रोत्साहन मिलेगा। धर्म और न्याय की व्यवस्था को बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में यमुनानगर निवासी विद्वान् **श्री इन्द्रजित् देव जी** ने कहा कि ढ़ाई हजार वर्ष पहले महात्मा बुद्ध हुए। करुणा, दया, ममता से उनका हृदय भरा हुआ था, किन्तु ईश्वर, वेद, दर्शन-शास्त्र, यज्ञ आदि के संबन्ध में उनके प्रश्नों का समुचित उत्तर देने वाला कोई विद्वान् नहीं था, इसलिये उन्हें इन सबका यथार्थ ज्ञान नहीं हो सका। अपने समय की राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों को देखकर वे नास्तिक हो गये। अमर बलिदानी भगत सिंह अल्पायु में क्रान्तिकारी गतिविधियों में सम्मिलित हो गये। शास्त्रों का अध्ययन नहीं कर सके, इसलिए ईश्वर के संबन्ध में दार्शनिक दृष्टिकोण प्राप्त नहीं कर सके। इसी प्रकार देश के पहले प्रधानमन्त्री पं. जवाहरलाल नेहरु जी भी ईश्वर और वेद से अनजान थे। पौराणिकों द्वारा ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव से विरुद्ध कथा करने के कारण बहुत से लोग ईश्वर को नहीं मानते। गौतम बुद्ध के ढ़ाई हजार वर्ष के बाद महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म हुआ। जिन्होंने ईश्वर और वेद के सम्बन्ध में नास्तिकों द्वारा उठाये गये प्रत्येक प्रश्न का समुचित उत्तर दिया। ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता, सर्वज्ञता और सर्वव्यापकता के विषय में किये गये सभी प्रश्नों का सत्यार्थ प्रकाश के सातवें समुल्लास में उन्होंने दार्शनिक समाधान प्रस्तुत किया। जैसे- ईश्वर अपने समान कोई दूसरा ईश्वर नहीं बनाता है, अवतार लेकर बन्धन में नहीं पड़ता, अनादि काल से चल रहे नियमों को नहीं तोड़ता है, जीवों को बिना कर्म किये अच्छा या बुरा फल नहीं देता है आदि। ईश्वर के सर्वशक्तिमान् होने का यही अर्थ है कि वह अपने कार्य करने में किसी दूसरे की सहायता नहीं लेता है।

सायंकालीन प्रवचन के क्रम में **स्वामी सोमानन्द जी** ने कहा कि हमारे देश में दो प्रकार की शिक्षा पद्धति प्रचलित है:- १. गुरुकुलीय आर्ष शिक्षा पद्धति। २. पाश्चात्य शिक्षा पद्धति। जब हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम नहीं हुआ था तब हमारे देश की शिक्षा पद्धति में पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली का प्रभाव नाममात्र भी नहीं था। देश के सभी भागों में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का प्रचलन था। उनमें सभी वेदों को सांगोपांग पढ़ाया जाता था।

सायंकालीन प्रवचन में **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** ने उपदेश मंजरी पुस्तक के विषय में चर्चा करते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द जी पाणिनि व्याकरण, निरुक्त, ऐतरेय आदि ब्राह्मण ग्रन्थ तथा दर्शन शास्त्रों के आधार वेदमन्त्रों का व्याख्यान करते थे। उनके समय में जो महीधर, सायण, उव्वट, रावण आदि स्वार्थी लोगों के कपोलकल्पित मनगढ़न्त वेदभाष्य उपलब्ध थे उनमें मन्त्रों के अर्थ सृष्टि के नियम तथा बुद्धि से विपरीत थे। वेदों के अनुसार मूर्तिपूजा, स्वार्थपूर्ति के लिए प्रार्थनाएं, यज्ञ में पशुओं की बलि, मांस की आहुति, मांसाहार, जादू-टोना, व्यभिचार, मन्त्रोच्चारण से शत्रुओं का

नाश आदि मानते थे। इन सब कारणों से ढ़ाई हजार वर्ष पूर्व बौद्धों ने अनेक ग्रन्थ बनाये और उनमें ब्राह्मणों की निन्दा की।

वानप्रस्थी साधक **श्री रमेश मुनि जी** ने कहा कि हम सभी हर समय अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए प्रयत्न करते रहते हैं। कोई भी प्राणी कभी भी किसी प्रकार का दुःख नहीं चाहता। मनुष्य को अन्य प्राणियों की अपेक्षा बुद्धि का विशेष साधन ईश्वर ने दिया है जिसका हम अधिक से अधिक उपयोग कर सकते हैं। सुख के साधनों को जानकर उसको प्रयोग में ला सकते हैं और जीवन को सुखी बना सकते हैं।

दर्शनार्थी-महर्षि दयानन्द वस्तु प्रदर्शनी एवं चित्र दीर्घा तथा ऋषि उद्यान की अन्य गतिविधियों को देखने के लिए देश-विदेश से जिज्ञासु आते रहते हैं इसी क्रम में झज्जर (हरियाणा) से छात्र-छात्राओं और अध्यापक-अध्यापिकाओं का एक दल १३ नवम्बर को ऋषि उद्यान आया।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

सम्पन्न कार्यक्रमः-

(क) १५-१७ नवम्बर : अलीपुर-नारनौल में ऋग्वेदपारायण यज्ञ तथा प्रवचन।

(ख) १८-२० नवम्बर : आर्यसमाज नजफगढ़, दिल्ली के वार्षिकोत्सव में।

(ग) २३-२७ नवम्बर : यजुर्वेद पारायण-यज्ञ, महर्षि दयानन्द आश्रम, जमानी, इटारसी।

(घ) २८ नवम्बर से ०४ दिसम्बर २०१६: आर्यसमाज सैक्टर-९ पंचकूला आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव।

आगामी कार्यक्रमः-

(क) ०६-१२ दिसम्बर २०१६: मुंडिया टोंक में पारायण-यज्ञ व सत्संग।

(ख) १५-१८ दिसम्बर २०१६: आर्यसमाज अशोक नगर, दिल्ली का वार्षिकोत्सव।

*** आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

सम्पन्न कार्यक्रमः-

(क) १७-२० नवम्बर : यजुर्वेद पारायण-यज्ञ, ग्राम-आमकी दीपचंदपुर, सहारनपुर।

(ख) २३-२७ नवम्बर : यजुर्वेद पारायण-यज्ञ, महर्षि दयानन्द आश्रम, जमानी, इटारसी।

दैनिक यज्ञ-प्रार्थना

पूजनीयप्रभोऽस्माकं।
क्रियतां भावमुज्ज्वलम्।
विना छलेन जीवाम।
बौद्धबलं प्रदीयताम्।।
सर्वे वदन्तु ऋग्वाणी।
जीवने सत्यधारणम्।
जीवन्तु मोदमानाश्च।
तरामः शोकसागरात्।।
अश्वमेधादियज्ञंतु।
यजन्तां नरपुङ्गवः।
सञ्चाल्य धर्म मर्यादां।
संसार सुलभामहै।।
श्रद्धया भक्त्या च नित्यं हि।
यज्ञादिकं यजामहै।
रोगपीडितविश्वस्य।
संतापं हर्त्तुमुद्यताः।।
मनसो भावना लुम्पेत्।
पापस्य पीडनस्य च।
पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
यज्ञेन नर-नारीणाम्।
लाभकारी भवेद् यज्ञः।
प्राणीं प्राणीं प्रति प्रभो।
जलवायुं तु सर्वत्र।
शुभगन्धसुधारकः।।
भूयात् प्रेमपथव्यासः।
व्रजेम स्वार्थ-भावना।
प्रत्येके व्यवहारे स्यात्।
इदन्न मम सार्थकम्।।
सम्प्रार्थयामहे नित्यं।
प्रभुप्रेमसमर्पितम्।
हे लोकनाथ! कारुण्य सर्वोपरि तवाशीषः।।

- डॉ. वेदप्रिय प्रचेता (जितेन्द्रनाथ)

समर्पित से भी अधिक समर्पित

डॉ. धर्मवीर जी

उदयपुर जाने से पहले ऋषि दयानन्द को अनेक भक्तों ने बड़े आग्रहपूर्वक रोका। उन्हें समझाया भी गया कि उदयपुर का प्रशासन ठीक नहीं है, राजव्यवस्था भी बिगड़ी हुई है। राजा विलासिताओं में फँसा हुआ है। महाराज! वहाँ के लोग अच्छे नहीं हैं, आप वहाँ सुरक्षित नहीं होंगे।

ऋषि दयानन्द ने ये सारी बातें सुनकर कहा कि चाहे मेरी उंगलियों को मोमबत्ती की तरह क्यों न जला दिया जाये, पर मैं सत्य सिद्धान्तों का प्रचार अवश्य करूँगा।

उपरोक्त इस घटना में एक व्यक्ति का सिद्धान्तों के प्रचार के लिये दीवानापन, पागलपन स्पष्ट दिखाई देता है। मानव जाति के दु:खों को अपना दु:ख मानकर उन्हें दूर करने के लिये अपने जीवन तक को आहूत कर देने का उदाहरण ऋषि दयानन्द थे। आगे चलकर उनकी शिष्य परम्परा में स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम जैसे बलिदानियों की लम्बी शृंखला चलती गई और भारतभूमि ऐसे राष्ट्र-भक्त दिव्य बलिदानियों को पाकर गौरवान्वित हुई। ऋषि दयानन्द के बाद पं. लेखराम से प्रारम्भ होकर यह शृंखला हिन्दी आन्दोलन, निजाम आन्दोलन, गौरक्षा आन्दोलन जैसी कड़ियों को जोड़ती हुई और लम्बी होती गई। जब तक धर्म-समर में स्वयं को आहूत करने वाले योद्धा आते रहे, आर्य समाज पाखण्डों, अन्धविश्वासों, वेद विरोधियों के सम्मुख और दृढ़ता के साथ बढ़ता गया।

कुछ समय से आर्य समाज में ये उत्साह, ये पागलपन, ये दीवानगी नदारद-सी दिखाई पड़ने लगी थी, इसलिये आर्य समाज लगातार अपना गौरव खोता जा रहा था। इस निराशा भरे वातावरण में भी एक दीपक था, जो लगातार स्वयं को जलाकर वर्तमान में आर्यजाति को प्रकाशित कर रहा था-आर्य समाज के आकाश का एकमात्र सितारा, जिसे आर्यजनता आशा की दृष्टि से देखती थी। नि:स्वार्थ-भाव से ऋषि दयानन्द के मिशन में लगे कार्यकर्त्ताओं, युवकों के मन में हर समस्या का एकमात्र समाधान था- **आचार्य धर्मवीर**। ये वो नाम था जो कभी किसी से डरा नहीं-कभी भी नहीं। कभी झुका नहीं, कभी रुका नहीं। आर्य समाज का पूरा संन्यासी वर्ग इस आचार्य की विद्वत्ता व संन्यस्तता के सामने नममस्तक था।

पाठक वृन्द सोच रहे होंगे कि इतनी बड़ी भूमिका किस बात को समझाने के लिये लिखी गई है। अनुभव कहता है कि किसी व्यक्ति की वास्तविकता उसकी निकटता व उसके व्यवहार से ही निखरकर सामने आती है। आचार्य धर्मवीर जी बलिदानियों की शृंखला में एक और कड़ी जोड़ गये या उन्होंने पूर्ण निष्ठा से जीवन समर्पित करके भी आर्यवाटिका को सींचा-ये वाक्य किसी प्रमाण की अपेक्षा तो नहीं रखते, पर फिर भी उनके जीवन से आने वाली पीढ़ी कुछ प्रेरणा ले सके, इसलिये उनके समर्पण का एक उदाहरण सप्रमाण दिया जा रहा है।

परोपकारिणी सभा, परोपकारी पत्रिका और गुरुकुल ऋषि उद्यान जिस ओहदे पर आज है, उसके पीछे एक नितान्त समर्पित व्यक्तित्व छिपा है, ऐसा समर्पण जिसे केवल समर्पण कहते मन नहीं मानता।

परोपकारी पत्रिका आर्य जगत् की शिरोमणि व प्रामाणिक पत्रिका है, पर कैसे बनी?

आचार्य धर्मवीर उन्हें जब भी जहाँ भी ऐसा लगा कि यहाँ विचारशील पाठकों की उपस्थिति है, यहाँ पत्रिका की उपयोगिता हो सकती है, उस स्थान के लिये उन्होंने नि:शुल्क पत्रिका भेजना प्रारम्भ कर दिया, चाहे इसके लिये अपनी जेब से ही धन क्यों न देना पड़ा हो। और एक बार जो पत्रिका का ग्राहक बन गया, उसे आजीवन पत्रिका भेजते ही रहे, चाहे शुल्क आया, या नहीं आया। यदि कोई व्यक्ति आर्थिक कारणवशात् पत्रिका का ग्राहक बनने में असमर्थ होता तो तत्काल अपनी ओर से उसे पत्रिका भेजने लगते। उन्हें पाठक की पहचान थी, उनका उद्देश्य था-ऋषि दयानन्द को हर विचारशील मस्तिष्क तक पहुँचाना। इसी कार्य के लिये मॉरिशस निवासी श्री सोनेलाल नामधारी जी को लिखा गया उनका पत्र हम सबके लिये प्रेरणास्रोत है।